चैतन्य लहरी

नवम्बर-दिसम्बर : 2006

चैतन्य लहरी

अंक : 11-12 , 2006

इस अंक में

3	गुरु पूर्णिमा - 2006
3	स्पेन में विश्व निर्मल धर्म को मान्यता
4	श्रीमाताजी के अवतरण के 1000 माह
4	श्रीमाताजी को सम्माननीय नागरिक की उपाधि
4	नन्हा फरिश्ता
5	पश्चिमी बंगाल में दूसरे आश्रम का उद्घाटन
7	पृथ्वी पर अवतरित होने का उद्देश्य
9	रामनवमी पूजा - 5 अप्रैल, 1998 (नोयडा हाऊस)
11	'लक्ष्मी तत्व' - नई दिल्ली 9 मार्च, 1979
24	परम पूज्य श्री माताजी का पत्र - 17.8.78
25	होली पूजा 29. 3. 83
33	निर्मलशक्ति युवासंघ संगोष्ठी (24, 25 जून 2006)
36	परम पूज्य श्रीमाताजी का प्रवचन - 4.5.1983

चैतन्य लहरी

प्रकाशक

निर्मल इन्फोसिस्टम्ज़ एवं टैक्नोलोजीज़ प्रा. लि.

प्लाट नं. 8, चन्द्रगुप्त हाउसिंग सोसाइटी,

पॉड रोड, कोथरुड

पुणे – 411 029

फोनः 020- 25285232

मुद्रक

कृष्णा प्रिन्टर्ज एण्ड डिज़ाइनर्ज़

292/23 ओंकार नगर 'बी'

त्रीनगर, दिल्ली-110035

मोबाइल : 9212238008

आप अपने सुझाव, सदस्यता एवं जानकारी के लिए निम्न पते पर लिखें :

श्री जी.एल. अग्रवाल

निर्मल इन्फोसिस्टम्ज़ एवं टैक्नोलोजीज़ प्रा. लि.

222, देशबन्धु अपार्टमैंट, कालकाजी,

नई दिल्ली-110 019

फोन : 26422054

अपने अनुभव, सहज सम्बन्धी लेख आदि निम्नलिखित पते पर भेजें :

श्री ओ.पी. चान्दना

जी-11-(463), ऋषि नगर, रानी बाग

दिल्ली-110 034

फोन : 65356811

गुरु-पूर्णिमा (2006)

मंगलवार 11 जुलाई 2006 ने वास्तविक गुरु–पूर्णिमा का दृश्य देखा। कबेला के आकाश में पूरा चाँद चमक रहा था। परम पूज्य श्रीमाताजी के निवास के आँगन में बहुत से योगी एकत्र हुए। पूरा वातावरण श्रद्धाभाव से परिपूर्ण था क्योंकि हर सहजयोगी श्रीमाताजी के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धा एवं सम्मान अभिव्यक्त करने के लिए उत्सुक था।

श्रीमाताजी ने सभी सामूहिकताओं के प्रतिनिधियों को अलग–अलग अवसर प्रदान किया और उन्होंने श्री चरणों में पुष्प एवं उपहार भेंट किए। एक–एक राष्ट्र के प्रतिनिधि आते गए और अन्त में युवा शक्ति तथा धर्मशाला स्कूल के बच्चों ने पुष्प अर्पण किए। ईरान की सामूहिकता ने श्रीमाताजी को अत्यन्त सुन्दर कढ़ाई की हुई कलाकृति भेंट की। इसकी कढ़ाई को पूरा करने में 1900 घण्टे का समय लगा था, इसके मध्य में श्रीमाताजी हैं और उनके चहुँ ओर कढ़ाई में अन्य गुरुओं के नाम लिखे गए हैं।

–आस्ट्रेलियन सहजयोगा न्यूज लैटर
(रूपान्तरित)

स्पेन में विश्व निर्मल धर्म को कानूनी मान्यता

प्रिय भाइयो और बहनों,

स्पेन सहजयोग–सामूहिकता अत्यन्त हर्ष–पूर्वक घोषणा करती है कि 31 मई 2006 को विश्व–निर्मल–धर्म को स्पेन में धर्म के रूप में मान्यता प्राप्त हो गई है और धर्म के रूप में विश्व निर्मल धर्म का पंजीकरण भी हो गया है।

स्पेन सामूहिकता की चिरप्रतीक्षित इच्छा पूर्ण हो गई है। यह सब परम पूज्य माताजी के आशीर्वाद से ही पूर्ण हो पाया है और हम सब उनके आभारी है :– "विश्व निर्मल धर्म को कानूनी मान्यता प्रदान कर दी गई है। लम्बे समय तक लिखा–पढ़ी करने तथा प्रशासनिक आवश्यकताओं को पूर्ण करने के पश्चात् हमें न्यायमन्त्रालय (Ministry of Justice) से सकारात्मक प्रतिक्रिया (Response) मिल पाई।

स्पेन के सहजयोगी आशा करते हैं कि यूरोप तथा पूरे विश्व में परम–पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी और विश्व निर्मला धर्म को कानूनी तथा सरकारी मान्यता प्राप्त होने की दिशा में यह पहला कदम होगा।

–आस्ट्रेलियन सहजयोगा न्यूज़ लैटर
(रूपान्तरित)

पृथ्वी पर परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी के एक हज़ार माह

21 जुलाई 2006 के शुभ दिन परम पूज्य श्रीमाताजी ने पृथ्वी पर 1000 माह पूर्ण किए (अर्थात 83 वर्ष और 4 माह)। ये दिवस अत्यन्त मंगलमय है जिसकी तुलना परम पूज्य श्रीमाताजी के जन्म–दिवस 21 मार्च से होती है।

इस शुभ दिवस के समारोह की मेज़बानी करने का सौभाग्य इटली को प्राप्त हुआ है।

इटली की सामूहिकता को मंगलकामनाएं।

Adrian Vasiu
(इन्टरनैट न्यूज़)

परम पूज्य श्रीमाताजी को इटली के सम्मानमय नागरिक की उपाधि

29 जून, 2006

हम अत्यन्त हर्ष के साथ घोषणा करते हैं कि परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी को इटली के सम्माननीय नागरिक की उपाधि प्रदान की जाएगी।

कबेला, लीग्रे अलेसॉन्द्रिया इटली की नगर–निगम स्थानीय सभा की हाल में हुई बैठक में परम पूज्य श्रीमाताजी को इटली के सम्मानमय नागरिक की उपाधि देने के लिए एकमत से चुना गया। उनके महान कार्य एवं जीवन को समृद्ध बनाने वाले अनुभव को मान्यता प्रदान करते हुए उत्कृष्टतम सम्मान पूर्वक श्रीमाताजी को सम्माननीय नागरिक की ये उपाधि दी जाएगी। वर्ष 1991 में, कबेला लीग्रे में श्रीमाताजी ने जब अपना निवास–स्थान लिया तो उसके बाद वैलबोलबैरा घाटी में महान वैभव एवं शान्ति का साम्राज्य प्रसारित हुआ।

इस शुभ समाचार के साथ श्रीमाताजी के श्री चरणों में पुष्प अर्पित किए गए। इस सद्भाव चेष्टा से वे अत्यन्त प्रसन्न थीं और अपने सभी शुभ–चिन्तकों और तथा स्थानीय नागरिकों, जिन्होंने इन वर्षों में निरन्तर सहजयोग का समर्थन किया है, को अपना प्रेम भेजा।

8 जुलाई को अधिकृत सभा में औपचारिक रूप से श्रीमाताजी को ये सम्मान–भेंट किया जाएगा। इस सभा में कबेला लीग्रे निगम के मेयर तथा अन्य स्थानीय सम्मान-प्रेय व्यक्ति भी उपस्थित होंगे।

–इन्टरनैट विवरण
रूपान्तरित

'नन्हा फरिश्ता'

('माँ मेरी' की प्रतिमा के सम्मुख प्रार्थना करता हुआ)

लॉ प्लेस के ऐमी और एन्ड्रयू जे. मैग्लो जूनियर को ये बताने की आवश्यकता नहीं है कि उनकी एक वर्ष की बेटी कुछ विशेष है। प्रतिदिन जब यह नन्हीं बच्ची घर के आँगन में आकर

परमेश्वरी माँ (मेरी) से बातें करने लगती है तो उन्हें इसकी झलक मिलती है।

"घर के सामने के आँगन में जब भी वह हमारे साथ होती है तो खेलना बन्द करके माँ मेरी की प्रतिमा के सम्मुख जा खड़ी होती है।"

इस तस्वीर में माँ मेरी के सम्मुख दोनों हाथ फैला कर पंजों पर खड़ी यह बच्ची अपनी अबोध भाषा में बातें कर रही है। आशा है यह तस्वीर हम सबको भी ईसामसीह के शब्दों को याद रखने की प्रेरणा देगी :–

"परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश पाने के लिए हमें भी नन्हें शिशुसम अबोध होना होगा।"

–इन्टरनैट विवरण (रूपान्तरित)

पश्चिमी बंगाल में दूसरे आश्रम का उद्घाटन

सहजयोग सोसाइटी (वैस्ट बंगाल चैप्टर) द्वारा द्वितीय आश्रम का उद्घाटन
कोलकाता सहजयोग समन्वयक श्री हिमाँशु शाह लिखते हैं :–

(30-5-2006)

जय श्रीमाताजी

परम पूज्य श्री माता जी के आशीर्वाद से पश्चिमी बंगाल के हम सब सहजयोगी कुछ भूमि खरीद कर दो आश्रम आरम्भ कर पाये। इनका विवरण इस प्रकार है :–

2. वर्ष 2005 में, कोलकाता के मध्य में एक सुन्दर आश्रम खरीदा गया। इसकी भूमि पूर्ण–स्वामित्व (Free-Hold) है और 31-3-06 को

अमारती आश्रम, जिला–हुगली, पश्चिमी बंगाल (क्षेत्रफल 10 कोटे अर्थात 7200 वर्ग फुट)

1. वर्ष 2004 में कोलकाता से 50 किलोमीटर दूर ग्रामीण क्षेत्र में भूमि खरीद कर आश्रम निर्माण किया गया। यहाँ पर आस पास के गाँवों के लगभग 200 लोग आकर सामूहिक ध्यानधारणा करते हैं।

सहजयोग सोसाइटी, पश्चिमी बंगाल अध्याय (West Bengal Chapter) के नाम इसका हस्तान्तरण हो गया है। सभी निराकार पूजाएं यहीं की जाती हैं। आश्रम उद्घाटन की तस्वीर निम्नलिखित है।

43/1, अशोक शास्त्री नगर, हरीनवी, कोलकाता (क्षेत्रफल -18 कोटे अर्थात 12960 वर्ग फुट)

भविष्य में इस पर तीन और मंजिलों का निर्माण किया जा सकने का प्रावधान है।
पश्चिमी बंगाल सहजयोग सोसाइटी (WB chapter) की ओर से

हस्ताक्षर
हिमाँशु शाह

Ph. (91) (33) 225-4575, 555-1313
Fax : (91) (33) 225 3428
E-mail : neeranand@hotmail.com

पृथ्वी पर अवतरित होने का उद्देश्य

(सकारात्मकता सर्वप्रथम ये समझ लेने में निहित है कि हम यहाँ पर क्यों हैं।)

(परम पूज्य श्रीमाताजी 16 जुलाई 1982)

"जैसा मैंने आपको बहुत बार बताया, दस धर्म हैं और हमें अत्यन्त सावधानी पूर्वक इन धर्मो का पालन करना चाहिए। इनकी अभिव्यक्ति तो बाहर होती है, परन्तु जो अन्दर होता है वही बाहर आता है। जब आप लोग बात करते हैं, कुछ कहते हैं तो मुझे पता चल जाता है कि यह व्यक्ति नकारात्मक है, और वह निश्चित रूप से सकारात्मक। सकारात्मकता की अभिव्यक्ति के बहुत से तरीके हैं, परन्तु मैं किस प्रकार यह जान जाती हूँ, ये बात मैं नहीं बता सकती क्योंकि मैं नहीं जानती कि किस प्रकार आपको बताया जाए। परन्तु मैं तो बस जान जाती हूँ कि फलाँ व्यक्ति निश्चित रूप से सकारात्मक है और फलाँ नकारात्मक। सर्वप्रथम ये जान लेने में ही सकारात्मकता निहित है कि हम इस पृथ्वी पर क्यों अवतरित हुए हैं? हम मानव क्यों है? समझने के लिए हम क्या करने वाले हैं? हम सहजयोगी क्यों हैं? सहजयोगी को क्या करना आवश्यक है? सहजयोगी के रूप में उसकी क्या जिम्मेदारी है? तब वह समझने के लिए आगे बढ़ता है :– माँ (श्रीमाताजी) मुझ पर इतनी दयालु क्यों है? मुझे चैतन्य लहरियाँ क्यों प्राप्त हुई? क्यों मैं उन थोड़े से लोगों में से हूँ जिन्हें यह विशिष्ट आशीर्वाद प्राप्त हुआ है?"

परमेश्वरी माँ के उपरोक्त कथन का अन्तर्वलोकन करते हुए और रविन्द्र नाथ टैगोर के शब्दों *".....स्वतन्त्रता के स्वर्ग में अपनी आत्मा को जागृत होने दो"* का आश्रय लेते हुए एक सहजयोगी इन प्रश्नों का उत्तर इस प्रकार देते हैं :–

सर्वप्रथम ये जान लेने में ही सकारात्मकता निहित है कि हम इस पृथ्वी पर क्यों अवतरित हुए हैं? हम मानव क्यों हैं? समझने के लिए हम क्या करने वाले हैं? हम सहजयोगी क्यों हैं? सहजयोगी को क्या करना आवश्यक है? सहजयोगी के रूप में उसकी क्या जिम्मेदारी है? तब वह समझने के लिए आगे बढ़ता है–माँ (श्रीमाताजी) मुझ पर इतनी दयालु क्यों है? मुझे चैतन्य लहरियाँ क्यों प्राप्त हुई? क्यों मैं इन थोड़े से लोगों में से हूँ जिन्हें यह विशिष्ट आशीर्वाद प्राप्त हुआ है?"

ये ऐसे मूल प्रश्न हैं जो कोई भी साधक साधना के आरम्भ में ही पूछता है। सर्वप्रथम, जब व्यक्ति सहजी नहीं होता तो ये सब गहन विश्लेषण प्रक्रिया बन जाती है जिसमें व्यक्ति अपने आस–पास की वास्तविकता के नज़रिए से जीवन को परिभाषित करने का प्रयत्न करता है–अपने आस–पास की वास्तविकता के प्रकाश में "जेन और मोटरसाइकिल चलाने की कला" जैसी पुस्तक, जिसका सम्बन्ध मोटर–साइकिल चलाने से कहीं अधिक व्यक्तिगत विश्लेषण से है, ऐसे साधक का अच्छा उदाहरण है जो बिना कोई उत्तर पाए शून्यता के बिन्दु तक पहुँच जाता है, क्योंकि उत्तर तो वहाँ है ही नहीं। परन्तु जब हम कार्ल युंग (Carl Jung) और सुकरात तथा अन्य साक्षात्कारी लेखकों की पुस्तकें पढ़ने लगते हैं (आत्म–साक्षात्कार प्राप्ति से पूर्व बिना ये जाने कि आत्म–साक्षात्कारी लोग क्या हैं) तब हम जीवन और वास्तविकता (Reality) के बिल्कुल भिन्न परिदृश्य में आ जाते हैं।

हम इस पृथ्वी पर क्यों हैं?

मानव विकास का उद्देश्य परमात्मा प्राप्ति है–परमात्मा के साथ योग प्राप्त करना–जहाँ प्रतिबिम्ब और प्रतिबिम्बक पूर्णतः एकरूप हो जाए। परन्तु सर्वप्रथम मानव अवस्था तक विकसित होना आवश्यक है क्योंकि परमात्मा का प्रतिबिम्ब केवल मानव हृदय में ही स्थापित होता है, परमात्मा द्वारा सृजन किए गए अन्य जीव–जन्तुओं में नहीं। इसी कारण से भोजन या सुरक्षा के लिए पशु–वध पाप नहीं है

परन्तु मानव हत्या घोरपाप है। मानवीय चेतना का वरदान पाकर मानव सन्तुष्टि के लिए और आगे जाता है तथा सर्वप्रथम आस–पास की चीज़ों को देखता है, भौतिक पदार्थो, भौतिकता, और अन्य शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक प्रेरणाओं में सन्तुष्टि खोजता है। आध्यात्मिक आयाम के अभाव में यह चेतना शीघ्र ही विषयासक्त (Sensual) और कृत्रिम अभिव्यक्ति बन जाती है और इसके प्रति दुर्बल होकर मानव सांसारिक जीवन की माया में खो जाता है, और ऐसा तब तक चलता रहता है जब तक व्यक्ति की मृत्यु नहीं हो जाती या जब तक उसे आत्म–साक्षात्कार (पुनर्जन्म) प्राप्त नहीं हो जाता।

हम सहजयोगी क्यों है? सहजयोगी को क्या करना आवश्यक है? सहजयोगी के रूप में उसकी क्या जिम्मेदारी है? तब वह समझने के लिए आगे बढ़ता है :– माँ (श्रीमाताजी) मुझ पर इतनी दयालु क्यों हैं? मुझे चैतन्य–लहरियाँ क्यों प्राप्त हुई? क्यों मैं उन थोड़े से लोगों में से हूँ जिन्हें यह विशिष्ट आशीर्वाद प्राप्त हुआ है?

जिन्हें श्रीमाताजी के माध्यम से आत्म–साक्षात्कार प्राप्त हुआ है, केवल उन्हीं सहजयोगियों में ही बिना माया जाल में फंसे भवसागर को पार करने तथा कुण्डलिनी को उठाने की क्षमता है। सहजयोगी अचानक नहीं आ गए हैं। कई कल्पों के जन्म और मृत्यु के आवागमन के चक्कर में विकसित होकर परमेश्वरी साम्राज्य में प्रवेश पाने की योग्यता प्राप्त करने के बाद कलियुग के अन्त में वे इस वरदान को प्राप्त करने के लिए आए हैं। परन्तु सभी सहजयोगियों की रक्षा नहीं होगी। चाहे जो भी हमारी स्थिति रही हो, हमें बहुत सी परीक्षाओं में से गुजरना होगा। जो लोग निरंतर परमेश्वरी नियमों एवं संहिता के अनुसार रहेंगे केवल वही परमात्मा के साम्राज्य के द्वार बन्द होने से पूर्व उसमें प्रवेश कर पाएंगे। अतः जब हम सहजयोग को अन्य सभी कार्यो–हमारा परिवार, काम–धन्धा, विवाह, जीवन और सभी कुछ–से ऊपर रखते हैं तथा अपने चित्त को श्रीमाताजी के चरण कमलों पर लगाए रखते हैं तब हम परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश करते हैं। यहाँ पर त्रिआयामी विश्व, जिसमें हम रहते हैं से बिल्कुल भिन्न, वास्तविकता का अस्तित्व है। सूक्ष्म–स्तर पर, बिना बोले, बिना बताए, केवल सूझबूझ से नकारात्मकताओं का उन्मूलन करते हुए–हमेशा चैतन्य प्राप्त करने की अवस्था में बने रहना, उस चैतन्य को जिसके माध्यम से हमें आदेश प्राप्त होते हैं कि क्या कार्य होना है–पूर्ण मौन एवं निर्विचार चेतना में परमेश्वरी योजना में अपनी स्थिति को जानते और पहचानते हुए, अपनी भूमिका के बारे में न कोई प्रश्न करना और किए जाने वाले कार्य के विषय में न कोई सन्देह करना, मानव–मात्र का उद्धार करने के लिए परमेश्वरी कार्य के पूर्ण उपकरण बनकर उसी में पूर्ण सन्तुष्टि का आनन्द लेते हुए उस स्थिति में बने रहना जहाँ पर चेतना अन्ततः उद्देश्य में समाहित हो गई है, और अपनी शून्यता में विलीन होकर पूरी तरह सन्तुष्ट हो जाना – यही परमात्मा से पूर्ण–योग की अवस्था है – सत्–चित्त–आनन्द की अवस्था।

जय श्रीमाताजी
इंटरनेट विवरण
रूपान्तरित

'रामनवमी पूजा'

नोयडा हाऊस (5 अप्रैल, 1998)

परम पूज्य श्रीमाताजी के प्रवचन का सारांश

चैत्र माह में शालिवाहन शक की नवरात्रि, प्रतिपदा से नवमी तक, महाराष्ट्र की अपेक्षा उत्तर भारत में अधिक धूमधाम से मनाई जाती है। महाराष्ट्र में श्रीकृष्ण का जन्म, (श्री विट्ठल–सम्राट श्रीकृष्ण) 'गोकुलाष्टमी' त्यौहार के रूप में धार्मिक उत्साह पूर्वक मनाया जाता है। श्री विट्ठल, भगवान विष्णु के आठवें अवतरण थे। मध्य रात्रि: 12:00 बजे उनका जन्म हुआ। भगवान विष्णु के सातवें अवतरण श्री राम का जन्म चैत्र माह की नवमी को दिन के 12:00 बजे हुआ। यह दिन 'रामनवमी' कहलाता है।

21 मार्च 1923 को परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का जन्म भी छिन्दवाड़ा, मध्य प्रदेश (भारत) में श्री राम की तरह से दोपहर 12:00 बजे हुआ। छिन्दवाड़ा, पूर्व–पश्चिम तथा दक्षिण–उत्तर दिशाओं में उस बिन्दु पर स्थित है जहाँ दो रेखाएं मिलती हैं। जन्म तिथि चन्द्र–माह पर आधारित है। सूर्य–माह पर आधारित पांचांग के अनुसार श्रीमाताजी का जन्म पहले माह के पहले दिन होना चाहिए था अर्थात शालिवाहन शक 1845 के चैत्र माह के प्रथम दिवस। यह दिन गुडिपाडवा के नाम से विख्यात है। श्रीमाताजी के जन्म दिन के साथ–साथ यह शालिवाहन सम्राट के राज्यभिषेक का दिन भी है। अब मार्च 28, 1998 से शालिवाहन शक 1920, चैत्र प्रतिपदा–प्रथम माह के प्रथम दिवस का आरम्भ होता है।

श्री राम आदर्श पति थे और श्री सीता जी आदर्श पत्नि तथा उनकी सन्तानें लव–कुश भी आदर्श पुत्र थे। श्री राम उच्च मर्यादाएं स्थापित करना चाहते थे ताकि भावी मानव उनका अनुसरण कर सकें। सर्वविदित है कि सुकरात ने उन्हें 'हितैषी राजा' का नाम दिया।

वास्तव में श्री राम के जीवन की सभी घटनाएं, जैसे अहिल्या उद्धार, शबरी मोक्ष, अधर्मी वानर सम्राट बाली–वध तथा रावण–वध (क्योंकि उसने सीता जी का अपहरण किया) धर्म का साम्राज्य स्थापित करने के लिए थीं। श्री राम तो धर्मातीत थे, अर्थात धर्म से परे। उनम धर्म तो अन्तर्जात था। वे धर्मातीत थे, धर्म की प्रातेमूर्ति थे।

राज्य की मर्यादाओं की खातिर उन्होंने श्री सीता जी को त्याग दिया (जो उन्हें अत्यन्त प्रिय थीं, केवल इसलिए कि अग्नि परीक्षा के बावजूद भी लोग उन पर सन्देह करते थे। अपने बच्चों का पालन–पोषण करने के बाद एक प्रकार से श्री सीता जी ने भी श्री राम को त्याग दिया। उनके पुत्रों ने सभी विद्याएं प्राप्त कर ली थीं तथा धनुषविद्या में भी वे इतने पारंगत हो गए थे कि उन्होंने अपने चाचा श्री लक्ष्मण को भी पराजित कर दिया और अन्ततः अश्वमेध यज्ञ के लिए घोड़े को मुक्त कराने के लिए स्वयं श्री राम को उनसे युद्ध करने के लिए आना पड़ा। परन्तु धर्मस्थित श्री सीताजी के हस्तक्षेप से पिता–पुत्रों के बीच होने वाले युद्ध को टाला जा सका। अपने ढंग से श्री राम ने जीवन–पर्यन्त इस प्रकार कार्य किया मानों अपने अवतरण होने को भुलाकर वे किसी नाटक में भूमिका निभा रहे हों! परन्तु बाद में श्री कृष्ण रूप में जब वे अवतरित हुए तो वे अपनी सभी शक्तियों के प्रति सचेत थे और एक–एक करके सभी राक्षसों को दण्ड देने के लिए अत्यन्त कूटनीति पूर्वक उन्होंने अपनी शक्तियों का उपयोग किया।

श्री राम महान देवी भक्त भी थे–शक्ति के पुजारी। लंका पर आक्रमण करने से पूर्व उन्होंने देवी–पूजा की। देवी को प्रसन्न करने के लिए भिन्न कर्म–काण्ड करवाने वाले एक ब्राह्मण की

उन्हें आवश्यकता थी। इस कार्य के लिए उन्होंने देवी भक्त ब्राह्मण–रावण–को बुलावा भेजा। रावण तुरन्त तैयार हो गया और नौ तरह के कर्म–काण्डों द्वारा देवी–पूजन करने में श्री राम की सहायता की।

श्री राम यदि कुटिल प्रवृत्ति होते तो वहीं रावण का वध कर देते। परन्तु वो तो 'मर्यादा–पुरुषोत्तम' थे। उन्होंने ऐसा अधम एवं गैर जिम्मेदाराना काम नहीं किया। वे दोनों यद्यपि शत्रु थे फिर भी पूजा करते हुए शत्रुता को पूर्णतः भुला दिया गया था।

उनके आज्ञाकारी सेवक तथा शिष्य श्री हनुमान भी ऐसे आदर्श शिष्य थे कि सभी सहजयोगियों को उनका अनुसरण करना चाहिए। वे अद्वितीय शक्तियों के स्वामी थे। उनका अबोध व्यक्तित्व अत्यन्त उत्कृष्ट था। श्री राम का कार्य करने के लिए वे हमेशा आतुर होते थे। बाद में जब भगवान विष्णु, श्री कृष्ण रूप में अवतरित हुए तो वो भी उनके साथ आए। वे हमेशा श्री कृष्ण के रथ की ध्वजा पर आरोहित हो कर उनके साथ होते थे। वे 'चिरंजीव' कहलाते है–शाश्वत अस्तित्व–सात शाश्वत विभूतियों में से एक। **सौंपे गए कार्योंको सम्पन्न करके वो आकर मेरी भी सहायता करते हैं। मेरी सभी पूजाओं में वे सदा उपस्थित होते हैं।** एक बार तो चैतन्याकार में, बम्बई में ली गई एक तस्वीर में, वे दिखाई भी दिए।

अतः सहजयोग में उत्क्रान्ति प्राप्त करने के लिए सभी सहजयोगियों को चाहिए कि अपनी जीवनशैली में इन सभी महान विभूतियों के चरित्र का अनुकरण करें। परमात्मा करें कि आप सब इन महान चरित्रों का अनुसरण करें तथा मानव आचरण के उच्च–आदर्शों को प्राप्त करने में सफल हों। परस्पर तथा अपने जीवन में आने वाले सभी लोगों के प्रति आप प्रेममय एवं करुणामय हों और आदर्श सहजयोगी भाई–बहन बनें।

परमात्मा आप सब पर शाश्वत आशीष–वर्षा करें।

इन्टरनैट उद्धरण (रूपान्तरित)
(from derelaferguson21@dol.com)
(Date 1.4.2006)

लक्ष्मी तत्व

(परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन)

(नई दिल्ली 9 मार्च 1979)

कृष्ण ने गीता में कहा है कि 'योगक्षेम वहाम्यहम्। इसका मतलब है–पहले योग। पहले वो क्षेम कहते, (पर) पहले उन्होंने 'योग' कहा, और उसके बाद 'क्षेम'। क्षेम का मतलब होता है, आपका well-being (कुशल–मंगल) आपका लक्ष्मी तत्त्व। तो पहले योग होना चाहिये।

जब तक योग नहीं होता तब तक परमात्मा का आपसे कोई मतलब नहीं। आपको पहले योग, माने 'परमात्मा से मिलन' होना चाहिये, आपके अन्दर आत्मा जागृत होनी चाहिए, जब आपके अन्दर आत्मा जागृत हो जाती है, तब आप परमात्मा के दरबार में असल में जाते हैं, नहीं तो आप रट्टू तोते के जैसे कहा करते हैं। जो कुछ भी बात होती है, बाहर ही रह जाती है। अन्दर का आपा जब तक आप जानते नहीं, जब तक आप अपने को पहचानते नहीं, तब तक आप परमात्मा के राज्य में आते नहीं और इसीलिये आप उसके अधिकारी नहीं हैं जो परमात्मा ने कहा है।

बहुत से लोग परमात्मा को इसका दोष देते हैं, कि हम तो इतनी परमात्मा की भक्ति कर रहे हैं, इतनी हम पूजा कर रहे हैं, इतने सर के बल खड़े होते हैं, ये करते हैं, वो करते हैं, धूप चढ़ाते हैं, सुबह से शाम तक रटते बैठते हैं, तो भी हमें परमात्मा क्यों नहीं मिलते? वास्तव में परमात्मा से बात करने के लिये, आपका उनसे 'सम्बन्ध' होना चाहिये, connection होना चाहिये। जब तक आपका योग घटित नहीं होता, तब तक क्षेम नहीं होता। क्षेम का मतलब है, आपकी चारों तरफ से रक्षा; लक्ष्मी तत्व की जागृति।

कृष्ण ने सिर्फ ये कहा है कि 'वहाम्यहम्'–"मैं करूँगा", पर कैसे करूँगा, सो नहीं कहा। सो मैं आपसे बताती हूँ, वह किस तरह से होता है।

जब योग घटित होता है, तब कुण्डलिनी त्रिकोणाकार अस्थि से उठकर के ब्रह्मरन्ध्र को छेदती है, जब कुण्डलिनी की शक्ति ब्रह्मरन्ध्र को छेदती है, तब उसमें ज्योति आ जाती है, क्योंकि आत्मा ज्योति को पा लेती है और उस ज्योति के कारण नाभि चक्र में जो 'लक्ष्मी तत्व' है वह जागृत हो जाता है। जैसे ही लक्ष्मी तत्व आपमें जागृत हो जाएगा, चारों तरफ से आप देखियेगा कि आपकी खुशहाली होने लगेगी।

कोई आदमी रईस हो जाए–जिसे हम 'पैसे–वाला' कहते हैं, जरूरी नहीं कि वह 'खुशहाल' है। अधिकतर पैसे वाले लोग महादुःखी होते है। जितना पैसा होगा, उतने ही वो गधे होते हैं, उतनी ही उनके घर के अन्दर गन्दगी आती है–शराब, दुनिया भर की चीज़, मक्कारीपन, झूठापन–हर तरह की चीज़ उनके अन्दर रहती है। हर समय मन में डर, भय–कभी सरकार आकर पकड़ती है, कि खाती है, कि हमारा पैसा जाता है, कि ये होता है, वो होता है। जो बहुत रईस लोग हैं, वो भी कोई लक्ष्मी पति नहीं हैं क्योंकि उनके अन्दर लक्ष्मी का तत्व नहीं जागृत हुआ है। सिर्फ़ पैसा कमा लिया। पैसा उनके लिये मिट्टी जैसा है, उससे कोई उनको सुख नहीं है।

लक्ष्मी का तत्व समझना चाहिये।

मैंने पिछली मर्तबा बताया था कि लक्ष्मी जी कैसी बनी हैं। उनके हाथ में दो कमल हैं–वो गुलाबी रंग के हैं और एक हाथ से वो दान करती हैं और एक हाथ से आश्रय देती हैं। गुलाबी रंग का द्योतक होता है–'प्रेम'। जिस मनुष्य के हृदय में प्रेम नहीं है वो लक्ष्मीपति नहीं हो सकता। उस का घर ऐसा होना चाहिये जैसे कमल का फूल होता है। कमल के फूल के अन्दर भौंरे जैसा जानवर, जो कि बिल्कुल शुष्क होता है–उसके काँटे चुभते हैं अगर आप हाथ में लीजिये तो–उसको तक वो

स्थान देता है। अपनी गोद में उसको सुलाता है उसको शान्ति देता है।

लक्ष्मीपति का मतलब है कि उसका दिल बहुत बड़ा है। जो अपने घर आए हुए अतिथियों को, किसी को भी अत्यन्त आनन्ददायी होता है–वो लक्ष्मीपति है। लेकिन अधिकतर आप रईस लोग देखते हैं कि महाभिखारी होते हैं। उनके घर आप जाइये तो उनकी एकदम जान निकल जाती है, कि 'मेरे दो पैसे खर्च हो जाएँगे'। जिस आदमी को हर समय ये फ़िक्र लगी रहती है कि 'मेरे आज चार पैसे यहाँ खर्च हो रहे हैं, दो पैसे वहाँ खर्च हो रहे हैं, इसको जोड़ के रखो, उसको कहाँ बचाऊँ, उस को क्या करूँ'–वो आदमी लक्ष्मीपति नहीं। कंजूस आदमी लक्ष्मी पति नहीं हो सकता। जो कंजूस है, वो कंजूस है, तो लक्ष्मीपति नहीं है। कंजूस आदमी दरिद्री होता है–महादरिद्री होता है। उसमें बादशाहत नहीं होती। जिस आदमी की तबियत में बादशाहत नहीं होती, उसे लक्ष्मीपति नहीं कहना चाहिये।

जो आदमी बादशाह होता है, वह चाहे ग़रीबी में रहे चाहे अमीरी में रहे, वह बादशाह होता है। वह बादशाह के जैसा रहता है। छोटी–छोटी चीज़ के पीछे, दो–दो कौड़ी के पीछे, इसके पीछे, उसके पीछे परेशान होने वाला लक्ष्मीपति नहीं हो सकता। इसीलिये लक्ष्मी–तत्व जागृत नहीं होता। इसीलिये नाभि–चक्र की बड़ी ज़ोर की पकड़ हो जाती है। उस आदमी के अन्दर Materialism (भौतिकवाद) आ जाता है। वह जड़वादी हो जाता है। छोटी–छोटी चीज़ का उसे बड़ा ख़्याल रहता है। 'ये मेरा, ये मेरा'–ये मेरा बेटा है, ये मेरा फ़लाना है, ये ढिकाना–ये सारी चीज़ जिस आदमी में आ गई तो लक्ष्मीपति नहीं। इसकी चीज़ मारूँ कि उसकी चीज़ मारूँ कि ये लूँ कि वो लूँ, कि सब 'मेरे' लिये होना चाहिये–इस तरह से जो आदमी सोचता है वो भी लक्ष्मीपति नहीं।

जो दूसरों के लिये सोचता है–'अगर मेरा अच्छा आलीशान मकान है तो इसमें कितने लोग आकर बैठेंगे? अगर मेरे पास आलीशान चीज़ें हैं तो कितने लोगों को आराम होगा? कैसे मैं दूसरे लोगों की मदद कर पाऊँगा? कैसे मैं उनका स्वागत कर पाऊँगा, किस तरह से मैं उनको अपने हृदय में स्थान दूँगा? 'मदद' का भी सवाल नहीं उठता; आदमी यह सोचता है कि 'ये मेरे ही अपने हैं। इनके साथ जो भी करना है मैं अपने साथ ही कर रहा हूँ'–तब असली लक्ष्मी तत्व जागृत हो जाता है।

कमल के जैसा उसका रहन–सहन, उसकी शक्ल होनी चाहिये। 'सुरमित' होना चाहिये ऐसा आदमी न कि उससे हर समय घमण्ड की बदबू आए। अत्यन्त 'नम्र' होना चाहिये। कमल का फूल हमेशा आपने देखा है, उसमें थोड़ी–सी झुकान रहती है। कमल कभी भी तनकर खड़ा नहीं होता, उसमें थोड़ी–सी झुकान डण्ठल में आ जाती है। उसी प्रकार जो कम से कम लक्ष्मी जी के हाथ में जो कमल हैं दोनों में इसी तरह की 'सुकुमारिता' है। दूसरों से बात करते समय वो बहुत ठण्डी तबियत से, आनन्द से, प्रेम भरा इस तरह से बात करता है–झूठा नहीं होता, वो Plastic के नहीं होते हैं, वो कमल असल में होते हैं।

ऐसा मनुष्य असल में कमल के जैसा होना चाहिये। एक हाथ से वो दानी होना चाहिए, उसके हाथ से दान बहते ही रहना चाहिए, बहते ही रहना चाहिए। हमने अपने पिता को देखा है। पिता की बात हम देखते हैं, बहुत दानी आदमी थे। वो देते ही रहते थे। उनके पास कुछ ज़्यादा हो जाए तो बाँटते ही रहते थे। मज़ा ही नहीं आता जब तक वो बाँटें नहीं। अगर उनसे कोई कहता कि 'आप आँख उठाकर नहीं देखते', तो कहने लगते कि "मैं क्या देखूँ? जो देने वाला है दे रहा है, मैं तो सिर्फ़ बीच में खड़ा हूँ–उसमें देखना क्या? मुझे तो शर्म लगती

है कि लोग कहते हैं कि 'तुम' दे रहे हो।" इस तरह का दानत्व वाला आदमी जो होता है, जो अपने लिये कुछ भी संग्रह नहीं करता है और दूसरों को बाँटता रहता है, दूसरों को देता रहता है। देने में ही उसको आनन्द आता है, लेने में नहीं–यह आदमी लक्ष्मीपति है। जो अपने ही बारे में सोचता रहे–'मेरा कैसे भला होगा, मेरे बच्चों का कैसे भला होगा, मैं कैसे अच्छा होऊँगा–ऐसे आदमी को लक्ष्मीपति नहीं कहते। उसमें कोई शोभा नहीं होती, वह भिखारी होता है। और लक्ष्मीपति एक हाथ से तो आश्रय देता है, अनेक को अपने घर में, जो भी आए, उससे अत्यन्त प्रेम से मिलना, उस से अत्यन्त प्रेम से, अपने बेटे जैसे उसकी सेवा करनी। उसके यहाँ नौकर–चाकर, घर में जानवर–अनेक लोग इसके आश्रय में होते हैं और वो हमेशा ये जानते हैं कि वह हमारा आश्रय दाता है। कोई हमें तकलीफ़ होयेगी, वो हमें देखेगा। रात को उठ कर के भी देखेगा, और चुपके से करता है। वो ये बताता नहीं, जताता नहीं, दुनिया को दिखाता नहीं कि मैंने उनके लिये इतना कर दिया, वो कर दिया–एकदम चुपके से करता है।

परमात्मा भी हू–बहू ऐसा है। तो एक स्त्री स्वरूप, माँ स्वरूप बनाया हुआ है–लक्ष्मीजी का स्वरूप। एक कमल पर लक्ष्मीजी खड़ी हो जाती हैं। आप सोचिये कि एक कमल पर खड़ा होना, माने आदमी में कितनी सादगी होनी चाहिये, बिल्कुल हल्का, उसमें कोई दोष नहीं। कमल पर भी वो खड़ा हो सके–ऐसा आदमी उसे होना चाहिये, जो किसी को अपने बोझ से न दबाए। जो बहुत ही नम्र होना चाहिये। जो दिखाते फिरते हैं हमारे पास ये चीज़ है, वो चीज़ है, फ़लाना है, ढिकाना है, वो लक्ष्मीपति नहीं हो सकता। 'मातृत्व' उनमें होना चाहिये। माँ का हृदय होना चाहिये, तब उसे लक्ष्मीपति कहना चाहिये।

ये सब लक्ष्मीपति के लक्षण हैं और जब आप के अन्दर ये तत्व जागृत हो जाता है, तो पहली चीज़ आप में आती है–'सन्तोष'। ऐसे तो किसी चीज़ का अन्त ही नहीं है, आप जानते हैं कि Economics (अर्थशास्त्र) में कहते हैं, कोई भी wants satiable होती ही नहीं है in general (सामान्यतया कोई भी चाहत की तृप्ति नहीं होती)। आज आपके पास ये है तो कल वो चाहिए। वो है तो वो चाहिये, वो चाहिये तो वो चाहिये। आदमी पागल जैसा दौड़ता रहता है, उसकी कोई हद ही नहीं होती। आज यह मिला, तो वो चाहिये, वो मिला तो वो चाहिये।

लेकिन आदमी को सन्तोष आता है। उसे संतोष आ जाता है। जब तक आदमी को सन्तोष नहीं आएगा, वह किसी भी चीज़ का मज़ा नहीं ले सकता। क्योंकि 'सन्तोष' जो है वह वर्तमान की चीज़ है present की चीज़, और 'आशा' जो है Future (भविष्य) की चीज़ है; 'निराशा' जो है ये Past (भूतकाल) की चीज़ है। आप जब सन्तोष में खड़े रहते हैं तो fully satisfied (पूर्णतया सन्तुष्ट), तब आप पूरा उसका आनन्द उठा रहे हैं, जो आपको मिला हुआ है। नहीं तो उनके पास कितना भी रहता हैं तो भी कहते हैं, 'अरे! उसके पास है–मुझे वो चाहिये।' तो ये काहे को मिला है? फिर वो मिल गया तो उसको वो चाहिये। कभी भी ऐसा आदमी अपने जीवन का आनन्द नहीं उठा सकता, कभी भी वो ऊँचा नहीं उठ सकता। रात–दिन उसकी नज़र जो है ऐसी ही बढ़ती रहेगी, जो चीज़ें बिल्कुल व्यर्थ हैं, जिनका कोई भी महत्व नहीं जिनका जीवन में कोई भी महत्व नहीं, जिसका अपने जीवन के आनन्द से कोई भी सम्बन्ध नहीं, ऐसी चीज़ के पीछे वो भागता है।

पर पहले योग घटित होना चाहिये–फिर क्षेम होता है। हमारे सहजयोग में–यहाँ पर भी अनेक लोग आये हुये हैं जो कि हमारे साथ सहजयोग में रहे और जिन्होंने पाया और इसमें

प्रगति की है। इनकी सबकी Financial (आर्थिक) प्रगति हुई है सबकी–A to Z। कोई–कोई लोगों के पास तो लाखों रुपया आया। जिनके पास एक रुपया नहीं था उनको लाखों रुपया मिला। ऐसे भी लोग हमारे यहाँ हैं जिन्होंने–अब देखिये, अभी भी जो आए हुए हैं अंग्रेज लोग, जो India (भारत) आना चाहते थे, तो इन्होंने कहा कि कैसे जाएँ? पैसा तो है इन के पास। इनकी भी बड़ी प्रगति हो गई। वैसे भी इनको बहुत पैसा–वैसा मिल गया और काफ़ी आराम से रहने लगे। लेकिन, जब आने लगे तो इन्हें एक Firm (संस्था) ने कह दिया, 'अच्छा, तुम मुफ़्त में जाओ, हम तुम्हारा पैसा दे देंगे, क्योंकि तुम हमारा यह काम कर देना।'

छोटी–छोटी चीज़ में परमात्मा मदद करता है। और इतना रुपया आपके पास बच जाता है कि आपको समझ नहीं आता कि क्या करूँ। ये लोग पहले Drugs लेते थे, शराब लेते थे और दुनिया भर की चीज़ें करते थे। उसमें बहुत रुपया निकल जाता था। अब मैंने देखा है कि इनके घर अच्छे हो गए हैं, घरों में सब चीज़ें आ गई, अच्छे से सब Music (संगीत) सुनते हैं, सब अच्छे–अच्छे शौक इनके अन्दर आ गए। सब बढ़िया तरीके से रहने लग गए। इनके बाल–बच्चे अच्छे हो गए। मैंने पूछा, 'यह कैसा हुआ?' कहने लगे कि हम सारा पैसा बर्बाद करते थे, हमें होश ही नहीं था कि हम कैसे रहते थे, कहाँ रहते थे। हम तो बेहोश ही रहते थे!

इसीलिये, जो गुरुजन हो गए हैं, उन्होंने शराब और ऐसी चीज़ों को एकदम मना किया है। अब, शराब इतनी हानिकारक चीज़ है कि इस तरफ़ से अगर बोतल आई शराब की, उस तरफ़ से लक्ष्मी जी चली गईं–'सीधा' हिसाब। उन्होंने देखा कि आपकी शराब की बोतल अन्दर आ गई, उधर से वो चली गईं। ऐसे आदमी को कभी भी लक्ष्मी का सुख नहीं मिल सकता। जिनके घर में शराब चलती है, उनके घर में लक्ष्मीजी का सुख नहीं हो सकता। हाँ, उनके यहाँ पैसा होगा, लेकिन लड़के रुपया उड़ाएँगे, बीवी भाग जाएगी–कुछ न कुछ गड़बड़ हो जाएगा। बच्चे भाग जाएँगे–कुछ न कुछ तमाशे होंगे। आज तक एक भी घर आप मुझे बतायें, जहाँ शराब चलती है और लोग खुशहाल हों। खुशहाल 'हो ही नहीं सकता।' खुशहाली शराब के बिल्कुल विरोध में रहती है।

इसीलिये गुरुजनों ने जो मना किया है–खास कार 'हर एक' ने; क्यों किया? हमको सोचना चाहिये। आखिर वो लोग कोई पागल नहीं थे। उन्होंने हजार बार इस चीज़ को मना किया कि 'शराब पीना बुरी बात है। शराब मत पियो, शराब मत पियो।' शराब तो एक ऐसी चीज़ है कि ये भगवान ने पीने के लिये तो कभी भी नहीं बनाई थी, पॉलिश करने के लिये बनाई थी–पॉलिश करने के लिये। कल लोग 'फ़िनायल' पीने लगेंगे! क्या कहें आदमी के दिमाग को! कुछ भी पीने लग जाएं तो कौन क्या कर सकता है? आदमी का दिमाग़ इतना चौपट है कि कोई भी चीज़ उसकी समझ में आ जाए, पीने लग जाएगा। उसे किसने कहा था शराब पीने के लिये?

अब ये पॉलिश की चीज़ आप शराब के नाम से जब पीते हैं तो आपके भी जितने भी Liver (जिगर) हैं, Intestines (अन्तड़ियाँ) हैं, सब पॉलिश हो जाते हैं। यहां तक कि Arteries (धमनियाँ) आपकी पॉलिश होकर के Stiff (सख्त) हो जाती हैं। Arteries इतनी Stiff हो जाती हैं कि उसकी जो स्नायु हैं वो अपने को स्थितिस्थापक नहीं बना सकते। माने, न तो वो बढ़ सकते हैं, न घट सकते हैं–बस जमते ही जाते हैं। Arteries जो हैं एकदम एक size की हो जाती हैं, तो खून भी नहीं चल पाता, खून भी अटक जाता है जब कोई भी दबाव न हो, उसके ऊपर में कोई फुलाव न हो और एकदम नली जैसे, बन जाए Arteries, तो उसमें

क्या होगा? ऐसा पॉलिश का गुर चढ़ता जाता है जिसकी कोई हद नहीं, और मनुष्य भी पॉलिश बन जाता है। ऐसा आदमी 'बड़ा' कृत्रिम होता है। ऊपर से बड़ी अच्छाई दिखाएगा। शराबी आदमी है; ऊपर से–'वाह! बड़ा शरीफ़ है, वो बड़ा दानी है, ऐसा है, वैसा है। सब ऊपरी चीज़ें। जो अपने बीवी बच्चों को भूखा मार सकता है, जो अपने बीवी बच्चों से ज्यादती कर सकता है, वो आदमी कितना भी भला बाहर बन करके घूमे उसका क्या अर्थ निकलता है, बताइये? इसलिये शराब की इतनी मनाही की गई है, इतनी मनाही कर गए हैं, सो किस लिये कर गये हैं?

अब मुसलमानों को इतनी मनाही है शराब की लेकिन उनसे ज़्यादा कोई पीता ही नहीं। क्यों मनाही कर गए? सोचना चाहिये। मोहम्मद साहब जैसे आदमी क्यों मनाही कर गए? नानक साहब इतनी मनाही कर गए–सिक्खों से ज़्यादा तो लंदन में कोई पीता ही नहीं। उनके आगे तो अंग्रेज हार गए। है कि नहीं बात? कौन–से धर्म में शराब को अच्छा कहा है? कोई भी धर्म में नहीं कहा। लेकिन सब धर्म में लोग इतना ज़्यादा पीते हैं और अपने गुरुओं का अपमान करते हैं।

हमारी सारी नाभि चक्र और उसके चारों तरफ़ दस हमारे जो धर्म हैं, जो कि गुरुओं ने बनाए हैं, ये दस धर्म हमारी नाभि में होते हैं। इसीलिए इन गुरुओं ने मना किया हुआ है कि आप अपने धर्मों को बनाने के लिये, पहली चीज़ है–शराब या कोई सी भी ऐसी आदत न लगाएँ जिससे आप उसके गुलाम हो जाएँ। अगर आपको ये गुलामी करनी है, तो आप स्वतन्त्रता की बात क्यों करते हैं? लोग तो सोचते हैं कि गुलामी करना ही स्वतन्त्रता है। आपको अगर कोई मना करे कि बेटे शराब नहीं पियो तो लोग सोचते हैं कि 'देखो, ये मुझे रोकते हैं टोकते हैं, मेरी "स्व–तन्त्र–ता" छीनते है'। मनुष्य इतना पागल है। उसको मना इसलिये किया जाता है कि 'बेटे, तुम दूसरी गुलामी मत करो'।

जब कभी कोई बात बड़े लोग बताते हैं तो उसको विचारना चाहिये–न कि उसको रटते बैठते चाहिये, सुबह से शाम तक। उसको विचारना चाहिये, उसको सोचना चाहिये कि उन्होंने ऐसी बात 'क्यों' कही; कोई न कोई इसकी वजह हो सकती है। ऐसे इतने बड़े ऊँचे लोगों को ऐसी बात कहने की ज़रूरत क्या पड़ी थी? क्यों इस चीज़ को बार–बार उन्होंने मना किया, ये सोचना चाहिये और विचारना चाहिये और कोई भी मनुष्य ज़रा सा भी बैठकर सोचे तो वह समझ सकता है कि इस कदर गन्दी ये चीज़ें हम लोगों ने अपना ली हैं, जिस के कारण हमारे यहाँ से लक्ष्मी–तत्त्व चला गया है। भारत से तो लक्ष्मी–तत्त्व बिल्कुल पूरी तरह से चला गया है। यहाँ पर लक्ष्मी–तत्त्व है ही नहीं; और जागृत करना भी बहुत कठिन है।

क्योंकि लक्ष्मी–तत्त्व जो है, वो ही परमात्मा के कूच का पाया है। नाभि में ही विष्णुजी का जो स्थान है, और विष्णु या जिसे हम लक्ष्मी, उनकी जो शक्ति मानते हैं–इसी में हमारी खोज शुरु होती है। जब्र हम Amoeba (अमीबा) रहते हैं, तो हम खाना खोजते हैं। ज़रा उससे बड़े जानवर हो गए तो और कुछ खाना पीना और संग–साथी ढूँढते हैं। उसके बाद हम इन्सान बन गए तो हम सत्ता खोजते हैं। हम इसमें पैसा खोजते हैं। बहुत से लोग तो खाने–पीने में मरे जाते हैं।

बहुत–से लोग तो सुबह से शाम तक क्या खाना है, क्या नहीं खाना है, ये करना है, वो करना है। इसी में सारे बर्बाद रहते हैं। जिन लोगों को अति खाने की बीमारी होती है, वो भी लक्ष्मी–पति कैसे? वो तो भिखारी होते हैं, इनका तो दिल ही नहीं भरता। एक मुझे कहने लग गई–एक हमारे यहाँ बहू आई थीं रिश्ते में, कहने लगीं कि 'मेरे बाप के यहाँ ये था, वो था'। अरे!' मैंने कहा, 'तुम में तो दिखाई देना चाहिये। तुम्हारे अन्दर तो ज़रा भी

सन्तोष नहीं। तुम्हें ये खाने को चाहिये, तुमको वो खाने को चाहिये; घूमने को चाहिये। कोई सन्तोष तुम्हारे बाप ने दिया कि नहीं दिया तुमको? अगर वाक़ई तुम्हारे बाप इतने लक्ष्मीपति थे तो कुछ तो तुम्हारे अन्दर सन्तोष होता!' "मिला तो मिला, नहीं तो नहीं मिला।

जब ये स्थिति मनुष्य की आ जाती है–जब उसकी सत्ता ख़त्म हो गई, जब उसको समझ में आया कि सत्ता में नहीं रहा, पैसे में नहीं रहा, किसी चीज़ में उसे वह आनन्द नहीं मिला, जिसे खोज रहा था, तब आनन्द की खोज शुरु हो जाती है। वो भी नाभि चक्र से ही होती है। इसी खोज के कारण आज हम Amoeba (अमीबा) से इन्सान बने। और इसी खोज के कारण, जिससे हम परमात्मा को खोजते हैं, हम इन्सान से अतिमानव होते हैं। 'आपा' को पहचानते हैं। आत्मा को पहचानते हैं–इसी खोज से। इसीलिये लक्ष्मी–तत्त्व बहुत जरूरी चीज़ है।

और लक्ष्मी–तत्त्व जो बैठा हुआ है, उसके चारों तरफ़ 'धर्म' है। मनुष्य के दस धर्म बने हुए हैं। अब आप Modern (आधुनिक) हो गए तो आप सब धर्म उठाकर चूल्हे में डाल दीजिये। भई आप Modern हो गए। क्या कहने आपके! लेकिन ये तो आपके अन्दर दसों धर्म हैं ही। स्थित' हैं, ये वहाँ हैं। अगर मनुष्य के दस धर्म नहीं रहे, तो वो राक्षस हो जाएगा। जैसे ये सोने का धर्म होता है कि ये ख़राब नहीं होता, इसी तरह से आपके अन्दर जो दस धर्म हैं, वो आपको बनाए रखने हैं–जो मानव धर्म हैं। अगर इन दस धर्मों की आप अवहेलना करें–और उसके उपधर्म भी हैं लेकिन basically ये दस धर्म आपको सम्भालने हैं, अगर वो दस धर्म आप न सम्भालें–तो आपका कभी भी उद्धार नहीं हो सकता, कभी भी आप पार नहीं हो सकते। पहले, जब तक आप धर्म को नहीं बनाते हैं, तब तक आप 'धर्मातीत' नहीं हो सकते–धर्म से ऊपर नहीं उठ सकते। पहले इन धर्मों को बनाना पड़ता है और इसीलिए इन गुरुओं ने बहुत मेहनत की, बहुत मेहनत करी है। इनकी मेहनत को हम लोग बिल्कुल मटियामेट कर रहे हैं, अपनी अक्ल की वजह से। सब इसको ख़त्म कर रहे हैं। "इन धर्मों को बनाना हमारा पहला परम कर्त्तव्य है।"

लेकिन आजकल के जो गुरु निकले हुए हैं, उन को आपसे या धर्म से कोई मतलब नहीं है–'आप शराब पीते हैं? लेओ और हमको भी एक बोतल लाओ, और आपको कोई हर्जा नहीं। अच्छा, आप औरतें रख रहे हैं? तो ठीक है, दस औरतें रखिये और एक हमारे पास भी भिजवा दीजिये, या अपने बीवी–बच्चे हमारे पास भेज दीजिये। आपकी जेब में जितना रुपया है, हमारे पास दे दीजिये–हमें आप से कोई मतलब नहीं। आपको जो भी धन्धा करना है करें। आपके बस पर्स में जितना पैसा है इधर जमा कर दीजिये, फिर आप जैसा है, वैसा करें! आज ही एक क़िस्सा है, बता रही थीं हमारे साथ आई हुई हैं कि इनकी बहन, राजकन्या है वो भी, और उनके पति बहुत शराबी, कबाबी, बहुत बुरे आदमी थे। और तो एक गुरु के शिष्य थे। इन्होंने जाकर उनसे बताया कि ये आदमी मारता है, पीटता है, सताता है, औरत रख ली है। उससे कुछ कहो। वो औरतें रखता है। और राजकुमार है, लेकिन क्या करें उसका इतना ख़राब हो रहा है।' तो कहने लगे कि रहने दो, तुमको क्या करना है? उनसे रुपये ऐंठते गए, रुपया ऐंठते गए। 'गुरुजी' को मतलब उनके रुपये से!

ये कोई गुरु हुए? जो आपसे रुपये ऐंठते हैं? आप के गुरु हो ही कैसे सकते हैं? जो आपके पैसे के बूते पर रहते हैं ये तो Parasites हैं। आपके नौकरों से भी गए गुज़रे हैं। कम से कम आपके नौकर आप का कुछ काम करते हैं। जो लोग आपसे रुपया ले करके जीते हैं, ऐसे दुष्टों को तो बिल्कुल राक्षसों की योनी में डालना चाहिए।

और ऐसे दुष्टों के पास जाने वाले लोग भी महामूर्ख हैं, मैं कहती हूँ। वो देखते क्यों नहीं? क्या आप परमात्मा को ख़रीद सकते हैं? क्या आप किसी गुरु को ख़रीद सकते हैं? अगर कोई गुरु हो तो क्या वो अपने को बेचेगा।

उसकी अपनी एक शान होती है। उसको आप ख़रीद नहीं सकते। कोई भी चाहे। एक ही चीज़ से आप उसको मात कर सकते हैं। आपके 'प्यार' से, आपकी 'श्रद्धा' से, आपके 'प्रेम' से 'भक्ति' से। और किसी चीज़ से वो वश में आने वाली चीज़ नहीं है। उसकी अपनी एक 'शान' होती है। तो अपनी एक 'प्रतिष्ठा' में रहता है। उसकी एक 'बादशाहत' होती है। उसको क्या परवाह होगी? आप हैं रईस, तो बैठें अपने घर में। उसको क्या? वो पत्तल में भी खा सकता है, वो चाहे ज़मीन पर भी सो सकता है, वो चाहे राजमहल में भी रह सकता है। वो जैसा रहना चाहे, रहे। उसे आप से कोई मतलब नहीं। उसको तो सिर्फ़ आपके 'प्यार' से, आपकी 'श्रद्धा' से और आपकी 'खोज' से। अगर आपको खोज है तो सर आँखों पर आपको उठा लेगा। 'ऐसे गुरु को खोजना चाहिये, जो आपको परमात्मा की बात बताए, जो आपकी आत्मा की पहचान कराए। 'जो मालिक से मिलाए' वही गुरु माना हुआ है।

जिसे दिखे, उसी को गुरु! ये तो अगुरु भी नहीं है–राक्षस हैं, 'राक्षस'! अंगूठियाँ निकालकर आप को देते हैं। जो आदमी आपको अंगूठी निकाल कर देता है, वो क्या परमात्मा की बात करता होगा? आपका चित्त अंगूठी में डालता है, आपको दिखाई नहीं देता? एक है–वो अधनंगा नाचना सिखा रहे हैं–अधर्म सिखा रहे हैं। कौन–से धर्म में लिखा है इस तरह की चीज़? दूसरे आजकल के गुरुओं के बारे में यह भी जानना चाहिये कि अपने ही ढँग से कोई चीज़ निकाल ली है। इनका पहले के गुरुओं के साथ कोई नहीं मेल बैठता। 'वो' जैसे रहते थे, जैसी उनकी सिखावन थी, जैसा उनका बर्ताव था, जो उनकी बातें थीं, उनके इनका कोई मेल नहीं बैठता।

अपने धर्म के जो अनेक इतिहास चले आ रहे हैं, जिसको कि आप कह सकते हैं कि किसी भी धर्म में लिखित, वही चीज़, वही चीज़ कही जाती है। अपने शंकराचार्य को पढ़े तो आप सहजयोग समझ लेंगे; आप कबीर को पढ़े आप समझ लेंगे; नानक को पढ़ें आप समझ लेंगे; मोहम्मद को पढ़ें आप समझ लेंगे; Christ को पढ़ें तो समझ लेंगे; कन्फ़्यूशियस और सुकरात से लेकर सबको देखें तो सहजयोग ही सिखाते हैं। और ये जो सब आपको सर के बल उड़ना और फलाना और ढिकाना और दुनिया भर की चीज़ आपको नचा–नचाकर मारते हैं–इनको कैसे आप गुरु मान लेते हैं? ***"एक ही गुरु की पहचान है-जो मालिक को मिलाए, वही गुरु है और बाकी गुरु नहीं।"***

सत्य पर अगर आप खड़े हुए हैं, तो आपको इसी चीज़ को देखना है। लेकिन इन्सान इतना Superficial (उथला) हो गया है कि वो 'सर्कस' को देखता है। कितने ताम–झाम लेकर के आदमी घूम रहा है। कितनी हँडियाँ सर पर रखकर चल रहा है? बाल कैसे बनाकर चल रहा है? क्या सींग लगा कर चल रहा है? "गुरु की सिर्फ़ एक ही पहचान है, कि वो सिवाय मालिक के और कोई बात नहीं जानता। उसी में रमा रहता है। वही गुरु, माने आप से ऊँचा इन्सान है।"

लेकिन जिनको आप ख़रीदते हैं, बाज़ार में, जिनको आप पैसा देते हैं, जो आपको बेवकूफ़ बनाते हैं; जो आपको Hyponotise (सम्मोहित) करते हैं, उनके साथ आप बंधे हुए हैं, उनके साथ आप लगे हुए हैं, तो इस तरह के लोगों को क्या कहा जाए? और इस कलियुग में, इस घोर कलियुग में, तो ऐसे अनेक अजीब तरह के एक–एक नमूने हैं मैं आपको बताऊँ, किसका वर्णन करूँ, किसका

कहूँ। ऐसे कभी न गुरु हुए, न होंगे, मेरे ख़्याल से जिस तरह से हो रहे हैं आजकल हो रहे हैं नमूने।

पर वो ऐसी चिपकन होती है उस चीज़ की कि अभी एक देहरादून से एक देवी जी आई थीं। उन की कुण्डलिनी एकदम ऐसे जमी हुई थी। तो मैंने कहा कि 'तुम कौन गुरु के पास गईं? उन्होंने बड़े इससे बताया कि उनके पास गई! मैंने कहा कि 'आपने उसके बारे में पेपर में पढ़ा कि नहीं पढ़ा? एक अठारह साल की लड़की के साथ उन्होंने जो कुछ भी गड़बड़ किया था, उस लड़की ने और पच्चीस और लड़कियों ने Blitz (ब्लिट्ज़–एक पत्रिका) में और इसमें और उसमें सब कुछ छापा था–दस साल पहले छापा था।' कहने लगीं, 'हम ने पढ़ा, पर वह सब झूठ है। 'हमने कहा', झूठ है! तो, आपको क्या मिला उनसे?' तो उनको बड़ा बुरा लग गया। कहने लगीं, 'मैं तो शादीशुदा औरत हूँ, मैं ऐसी, मैं वैसी हूँ।' फिर मैंने कहा 'ऐसे आदमी के दरवाज़े जाना ही क्यों?' लेकिन यह नहीं कि वो औरत बदमाश है, ये नहीं कि वो ख़राब औरत है। पर उस पर Hypnosis (सम्मोहन) है, hypnotised (सम्मोहित) है। कोई उनको Freedom (स्वतन्त्रता) नहीं। गुरु बैठेंगे सात मंजिल पर जाकर! आप जाइये, वहाँ पर 'सेवा' करिये! इतनी बड़ी–बड़ी पेटियाँ रखी रहेंगी उसमें आप पैसा डालिये। सेवा का मतलब है–पैसा डालिये! और लोग घर से पैसे भर–भरकर ले जाते हैं, वहाँ डालने के लिये। यह आप देख लीजिये, कहीं भी जाकर के इतनी बड़ी–बड़ी ट्रंकें रखी रहेंगी। अरे! हमारे भी पैर छूते हैं तो कोई एक रुपया दे जाता है, कभी पाँच रुपया रख जाता है! मुझे आती है हँसी! मतलब आदत पड़ गई है न। हनुमान जी के मन्दिर जाओ, वहाँ भी सवा रुपया चढ़ाओ। और इसी चक्कर की वजह से हर जगह गड़बड़, हर जगह गड़बड़ हो गई है। ऐसी कोई जगह नहीं छोड़ी जो पवित्र जगह रह गई हो।

और इसी चक्कर की वजह से हमारे जो जवान बेटे हैं, जो जवान लोग हैं, सोचते हैं कि परमात्मा है कि तमाशा है ये सब? क्योंकि वो तो अपनी बुद्धि रखते हैं न, अभी साबुत हैं दिमाग़ उनके। उनको अविश्वास हो रहा है। सारे धर्मों में ये हो गया है, आपको आश्चर्य होगा।

Algeria (अल्जीरिया) से हमारे पास आए थे एक साहब–जवान हैं, बहुत होशियार और इंजीनियर थे। वो भी इसी आन्दोलन में कि ये किस कदर ये मुसलमान और ये Fanaticism (धर्मान्धता) इन में है और इस तरह से ये लोग दुष्टता करते हैं और ये मुल्ला लोग हैं, सब पैसा खाते हैं और सब (जनता) के पैसे पर जीते हैं और अपने को बड़ा महान् समझते हैं और सब लोग उनके सामने झुकते हैं। फिर उन्होंने Pope (पोप) को भी देखा। वो भी एक नमूना है। तो बिल्कुल अविश्वास से भरकर आए। उन्होंने कहा कि ये सब धोखा है। इसमें कोई अर्थ नहीं–सब झूठ है। वो हमारे पास आए तो हमने कहा–यह बात नहीं।

"जब सत्य है तभी उसका झूठ निकलता है।" जब सत्य होता है तो उसी के आधार पर लोग झूठ बनाते है न। सत्य भी कोई चीज़ है। Absolute (परम) भी कोई चीज़ है। 'अच्छा' हमने कहा, 'तुम देखना सहजयोग में'।

"सहजयोग जो है, ये धर्मान्धता और अविश्वास के बीचों बीच है, जहाँ परमात्मा साक्षात् आपसे मिलते हैं। आप स्वयं इसका साक्षात्कार करें, इस का अनुभव करें, इसमें जमें। जब तक आप सहज योग में जमते नहीं, तब तक आप पूरी तरह से इसका अनुभव नहीं कर सकते। जो जम गए, उन्होंने पा लिया, मिल जाता है। 'जिन खोजा तिन पाया।' गर खोजा ही नहीं तो कोई आपके पैर पर तो सत्य बैठने नहीं वाला कि 'भई मुझे खोज'। उसकी अपनी प्रतिष्ठा है। उसको खोजना चाहिए, लेकिन उसको खोजने से, सत्य से आनन्द उत्पन्न

होता है। सत्य और आनन्द दोनों एक ही चीज़ हैं, एक ही चीज़ हैं दोनों। जैसे चन्द्र की चन्द्रिका होती है या जिस तरह से सूर्य का उसका अपना प्रकाश होता है, उसी प्रकार सत्य और आनन्द दोनों चीज़ें एक साथ हैं। जब आप सत्य को पा लेते हैं, तो आनन्द–विभोर हो जाते हैं, आनन्द में रममाण हो जाते हैं।

लेकिन ये सिर्फ़ लैक्चरबाज़ी नहीं है कि आपको मैं लैक्चर देती रहूँ सुबह से शाम तक। लैक्चर से तो मेरा गला थक गया। अब पाने की बात है कि कुछ पाओ, 'आत्मा' को पाओ। बहुत–से लोग ऐसे भी मैंने बहादुर देखे हैं 'हमें तो कुछ हुआ नहीं माताजी' माने बड़े अच्छे हो गए! 'होना चाहिए'।

नहीं हुआ माने कुछ गड़बड़ है आपके अन्दर। कोई न कोई तकलीफ़ है, आप बीमार हैं, आप mentally (मानसिक रूप से) ठीक नहीं हैं, आप ने कोई ग़लत गुरु के सामने अपना मत्था टेका है। अगर आपने अपना मत्था ही जो कि परमात्मा ने इतनी शान से बनाया है, इसको किसी ग़लत आदमी के सामने टेक दिया है तो ख़त्म हो गया मामला। आपको हमें भी अन्धता से नहीं विश्वास करना चाहिये। ग़लत बात है।

हम चाहते हैं आप पाओ और उसके बाद भी अगर आपने अविश्वास किया तो आपसे बड़ा मूर्ख कोई नहीं। और उसके बाद भी अगर आप जमे नहीं, तो आपके लिये क्या कहा जाए?

जब आप पा लेते हैं तो इसमें जमिये। और जमने के बाद आप देखिये कि आपकी पूरी शक्तियाँ जो भी हैं, उस तरह से हाथ से बहती हैं और आप फिर दूसरों को भी इस आनन्द को दे सकते हैं। दूसरों को भी ये सुख दे सकते हैं। और ये किस तरह से घटित होता है, कैसे बन पड़ता है, ये आप धीरे–धीरे, जैसे–जैसे इसमें गुज़रते जाते हैं आप खुद इसको समझते हैं।

अब इनमें से बहुत–से लोग हैं, छः महीने पहले हमारे पास में आए। 'सिर्फ़ छः महीने पहले' हमारे पास में आए। अब ये डॉ. बरजोर्जी साहब हैं। ये हमारे पास छः महीने पहले आए और ये बहुत बड़े डॉक्टर हैं लन्दन के, इसके अलावा जर्मनी में भी Practice (व्यवसाय) करते हैं। जब से इन्होंने पाया है, इसके पीछे पड़ गए हैं। तब से कैंसर ठीक किये हैं, दुनिया भर की बीमारियाँ ठीक की हैं और अब कहते हैं कि इसको पाने के बाद सब कुछ irrelevent (असंगत) लगता है। क्योंकि 'जब आप बिल्कुल सूत्र पर ही काम करने लग गए, जब आपने सूत्र को ही पकड़ लिया, तो बाक़ी चीज़ें हिलाना कुछ मुश्किल नहीं।

इस प्रकार 'आप सब' इसके अधिकारी हैं, इसीलिये इसे सहज (सहज) कहते हैं। 'सह' माने आपके साथ, 'ज' माने पैदा हुआ। आप ही इसके अधिकारी हैं–हर एक आदमी इसका अधिकारी है और इसको पा लेना चाहिये। जैसे एक दीप दूसरे दीप को जला सकता है, उसी प्रकार एक Realized Soul (साक्षात्कार प्राप्त) दूसरे को Realization (साक्षात्कार) दे सकता है। लेकिन Realised soul होना चाहिए। अगर एक दीप जला हुआ ही न हो, तो दूसरे दीप को क्या करेगा? जब दूसरा दीप जल जाता है तो वो तीसरे को जला सकता है। इसी प्रकार ये घटना घटित होती है, और आदमी के अन्दर लाइट (प्रकाश) आ जाती है।

अब लाइट आने का मतलब यह नहीं कि आप Light देखते हैं। यह भी एक दूसरी एक अजीब–सी चीज़ है कि लोग लाइट देखना चाहते हैं। 'देखना जब होता है, तब वहाँ आप नहीं होते। जैसे कि समझ लीजिये कि आप जब बाहर हैं, तो आप इस Building (भवन) को देख सकते हैं, लेकिन जब आप अन्दर आ गए, तो क्या देखियेगा? कुछ भी नहीं! तब तो सिर्फ़ आप 'होते' मात्र हैं, आप देखते नहीं हैं। जहाँ–जहाँ देखना होता है तो सोचना कि आप अभी बाहर हैं। लाइट जो लोगों

को दिखाई देती है, वो Short circuit (फ़्यूज़ उड़ना) हो जाता है न, वैसी लाइट है, जिसे स्पार्क (चिंगारी) बोलते हैं। इसलिये जिस जिस को लाइट दीख रही हो, वो मुझे बताएँ–आज्ञाचक्र टूटा है उस आदमी का। उसको ठीक करना पड़ेगा।

ये सारे चक्र भी कुण्डलिनी अपने से ठीक करती चलती है। "वो आपकी माँ है", आप हर एक की अलग–अलग माँ हैं, वो आप जिसको सुरति कहते हैं, वही यह सुरति है। और यह अपने आप से चढ़ती है और अपने आप आपको ठीक करके वहाँ पहुँचा देती है। आप में अगर कोई दोष है, वो भी हम समझ सकते हैं। वह भी वो बता देती है कि क्या दोष ठीक करना है। कोई ग़लती हो गई तो भी ठीक हो सकता है, लेकिन अपने को Receptive mood (प्राप्ति इच्छुक स्थिति) में रहना चाहिये–कि 'हम इसे ले लें, प्राप्त कर लें और 'हो' जाएँ।

अब कल भी एक बात जो उठी थी, वह आज भी दिमाग में किसी के उठ रही है कि कुण्डलिनी Awakening (जागृति) तो, लोग कहते हैं, कि बड़ी मुश्किल चीज़ है, बड़ी कठिन चीज़ है, यह कैसे होती है। इसमें कोई नाचते हैं, कोई बन्दर जैसे नाचते हैं, कोई कुछ करते हैं। कुछ भी नहीं होता! हमने हज़ारों की कुण्डलिनी जागृत की हुई हैं और पार किया हुआ है। ऐसा कभी भी नहीं होता है। जो परमात्मा ने आपके उद्धार के लिये चीज़ रखी हुई है, आपके पुनर्जन्म के लिये आपकी माँ है, वह आपको कोई भी दुःख नहीं देती। उल्टे आपको वो 'अत्यन्त सुखदायी' है। कैंसर जैसी बीमारी कुण्डलिनी के awakening (जागृति) से ठीक होती है। सारी बीमारी आपकी ठीक हो सकती हैं। इसी तरह की बड़ी भारी 'देवदायिनी, आशीर्वाददायिनी', इस तरह की बड़ी भारी शक्ति आपके अन्दर में हैं। इस तरह की ग़लत धारणाएँ कर लेना, कि हम बन्दर हो जाएँगे, मेंढक हो जाएँगे–आपको अतिमानव जो बनाने वाली चीज़ है, तो आपको क्या मेंढक बनाएगी? इस चीज़ को आप समझ लें।

अब 'यह कठिन होता है'! तो, उसके लिये कठिन है जो बेवकूफ़ है, जिसको मालूम नहीं, जो इसका अधिकारी नहीं, उसके लिये कठिन है। "जो इसका अधिकारी है, जो इसके सारे ही काम–काज जानता है, उसके लिये यह बाएँ हाथ का खेल है। हो सकता है कि हम इसके अधिकारी हैं और हम इसके सारे काम जानते हैं, इसीलिये आसानी से हो जाता है।" बहरहाल आप अपनी आँख से भी देख सकते हैं इसका उठना। आप इसकी जागृति देख सकते हैं, इसका चढ़ना भी देख सकते है। और इस की हम लोगों ने फ़िल्म–विल्म भी बनाई है। पर जो लोग बहुत शंकापूर्ण होते हैं, उनके लिये सहजयोग ज़रा मुश्किल से पनपता है। इस चीज़ का पाना चाहिये और इसको लेना चाहिये।

आजकल जो ज़माना आ गया है, जिस ज़माने में हम रह रहे हैं–कलियुग में, असल में हम ये कहेंगे कि आध्यात्मिक दृष्टि से हम लोग बहुत ही ज़्यादा, बहुत ही ज़्यादा कमज़ोर है। Insensitive अर्थात् संवेदना हमारे अन्दर नहीं है। हम आध्यात्म की चीज को अगर समझते होते और अगर समझते कि 'आत्मा की पहचान क्या है', तो हम कभी भी ग़लत गुरुओं के पीछे नहीं भागते। लेकिन हमारे अन्दर सच को पहचानने की शक्ति, बहुत कम हो गई है, क्षीण हो गई है। हम यह नहीं पहचान सकते, कि सच्चाई क्या है। उसकी वजह यह है कि हम इतने कृत्रिम हो गए हैं, इतने artificial (कृत्रिम) हो गए–आप artificial हो जाइएगा तो आपकी सत्य को पहचानने की शक्ति कम हो जाएगी।

पर जैसे गाँव में, अभी भी मैं देखती हूँ कि गाँव में लोग एकदम पहचान लेते हैं। वो पहचान लेते हैं कि कौन असल है और कौन नक़ल है। गाँव के लोगों में नब्ज़ होती है इस चीज़ को पहचानने

की। वो समझते हैं, कि ये आदमी नकली है और ये आदमी असली है।

पर शहर के लोग तो आप जानते हैं, कृत्रिम हो जाते हैं। Artificially रहते हैं, इसलिये सत्य की पहचान नहीं होती और इसलिये भी जितने चोर ढंग के लोग हैं, ये सब आपके शहर के पीछे लगे हैं।

ये सारे शहरों में आते हैं, गाँव में कोई नहीं काम करता। क्योंकि आपके जेब में पैसे होते हैं, आपकी जेब से उनको मतलब है। वो काहे को गाँव में जाएँगे?

सहजयोग हमारा गाँव में चलता है। असल में शहर में तो हम यों ही आते हैं लेकिन हमारा काम तो गाँव में ही होता है। गाँव के लोग सीधे–सादे, सरल, परमात्मा से सम्बन्धित लोग होते हैं, वो इसको बहुत आसानी से पा लेते हैं। उनको एक क्षण भी नहीं लगता।

लेकिन शहर के लोगों में एक तो शहर की आबोहवा की वजह से और यहाँ के तौर–तरीकों की वजह से आदमी इतना अपने को बदल देता है, इस कदर अपने को धर्म से गिरा देता है–"अब ये इसमें क्या हुआ साहब, सब लोग पीते है Business के लिये पीना चाहिये।" मानो जैसे Business ही भगवान है। "उसको तो पीना ही चाहिये, फिर उसके अलावा Business कैसे चलेगा।"

या तो फिर ये कहो कि तुम परमात्मा में या धर्म में बिल्कुल विश्वास नहीं करते और अगर ज़रा भी विश्वास करते हो, तो जो अधर्म है, इसको नहीं करना चाहिये। कोई ज़रूरत नहीं किसी को पीने की। ये भी एक ग़लतफ़हमी है कि Business के लिए करना पड़ता है, इसके लिये। जो आदमी अपने को धोखा देना चाहता है उसे तो कोई नहीं बचा सकता।

हमारे पति भी आप जानते हैं सरकारी नौकरी में रहे हैं उन्होंने बहुत बड़ी Shipping (जहाजी) कम्पनी चलाई, उसके बाद आज भी बहुत बड़ी जगह पर पहुँचे हुए हैं। मैंने उनसे एक बात कही कि शराब मेरे बस की नहीं और ज़िन्दगी भर उन्हों ने छुई नहीं, एक बूँद भी और भगवान की कृपा से बहुत successful (सफल) हैं। सब उनको मानते हैं, सब उनकी इज़्ज़त करते हैं। आज तक किसी शराबी आदमी का कहीं पुतला बना है कि ये महा शराबी थे। मुझे एक भी बताएँ, एक भी देश। इंग्लैण्ड में लोग इतनी शराब पीते हैं, मैंने किसी को देखा नहीं कि 'ये बड़ा शराबी खड़ा हुआ है, इसकी पूजा हो रही है कि शराब पीता था।' किसी शराबी को आज तक संसार में कहीं भी मान्यता हुई है? फिर आपका Business इससे कैसे बढ़ सकता है। अगर आपकी इज्ज़त ही नहीं रहेगी तो आपका Business कैसे? इज्जत से Business होता है। धोखाधड़ी से Business नहीं है। जो आदमी एक बार खड़ा हो जाए तो कहते हैं 'एक आदमी खड़ा हुआ है 'ये'।

इस तरह से अपने को आप इन चक्करों में, इन societies में, इसमें इस तरह से क्यों मिलाते चले जाते हैं। आप अपने व्यक्तित्व को सँभालें; इसी के अन्दर परमात्मा का वास है। आजकल के जमाने में ये बातें करना ही बेवकूफ़ी है और कहना ही बेवकूफ़ी है। लेकिन आप नहीं जानते कि आपने अपने को कितना तोड़ डाला है? अपने को कितना गुलाम कर लिया है?

इन सब चीज़ों में अपने को बहा देने के बाद आपको मैं क्या दे सकती हूँ? आप ही बताइये। अब कम से कम सबको ये व्रत लेना चाहिए कि हम खुद जो हैं, हमारी इज्जत है। परमात्मा ने हमको एक amoeba से इन्सान बनाया है। एक amoeba छोटा–सा, उससे इन्सान बनाना कितनी कठिन चीज़ है? हजारों चीजों में से गुज़ार करके इतनी योनियों में से गुज़ार के आज आपकी जैसी एक सुन्दर चीज़ परमात्मा ने बनाकर रखी है। फिर

आपको उसने freedom देदी, स्वतन्त्रता दे दी कि तुम चाहो तो अच्छाई को वरण करो और चाहो तो बुराई को। जिस चीज को चाहो तुम अपना सकते हो। तुम्हें बुराई को अपनाना है चलो बुराई करो, अच्छाई को अपनाना है अच्छाई करो।

अब, आपको भी सोचना चाहिये कि जिस परमात्मा ने हमें बनाया है, 'इतनी' मेहनत से बनाया है, उसने वो भी इन्तज़ाम हमारे अन्दर ज़रूर कर दिये होंगे जिससे हम उसको जानें और उसको समझें और अपने को जानें और हमारा मतलब क्या है, हम क्यों संसार में आए हैं, हमारा क्या fulfilment है? मनुष्य ने यह कभी जानने की कोशिश नहीं की कि आख़िर हम इस संसार में क्यों आए हैं? Scientist यह क्यों नहीं सोचते कि हम amobea से इन्सान क्यों बनाए गए? हमारी कौन–सी ऐसी बात है कि जिसके लिए परमात्मा ने इतनी मेहनत की और उसके बाद हमें स्वतन्त्रता दे दी?

बस इसी जगह परमात्मा भी आपके आगे झुक जाते हैं क्योंकि आप स्वतन्त्र हैं। आपकी स्वतन्त्रता परमात्मा नहीं छीन सकते। अगर आपको परमात्मा के साम्राज्य में बिठाना है, आपको अगर राजा बनाना है, तो आपको परतन्त्र करके कैसे बनाया जाए ? आपको क्या hypnosis करके बनाया जाएगा? आप पूरी तरह से स्वतन्त्र हैं। आप चाहें तो परमात्मा को स्वीकार करें, अपने जीवन में, और चाहें तो शैतान को। दोनों रास्ते आपके लिए पूरी तरह परमात्मा ने खोज रखे हैं।

और सबने बड़ी मेहनत की है। मैं आपसे बताती हूँ कि गुरुओं ने कितनी आफ़तें उठाई हैं। इतनी ही मेहनत, आपके पीछे सारे जितने भी अवतार हो गए, उन्होंने, गुरुओं ने, कितनी मेहनत करी है। इनको कितना सताया, हमने उनको कितना छला। उनकी कितनी तकलीफ, वो सारी बर्दाश्त करके उन्होंने आपको बिठाने की कोशिश की।

लेकिन कलियुग कुछ ऐसा आया, बवण्डर जैसा कि हम सब कुछ भूल गए और हमारी जो भी आत्मिक संवेदन है इसको भूल गए। हम पहचान ही नहीं पाते किसी इन्सान की शक्ल देखकर कि ये असली है कि नक़ली है–आश्चर्य है! शक्ल से ज़ाहिर हो जाता है अगर कोई आदमी वाकई परमात्मा का आदमी है उसकी शक्ल से ज़ाहिर होता है। हम यह पहचानना ही भूल गए कि यह हमारे अन्दर की जो sensitivity है, जो हमारे अन्दर की संवेदनशीलता है वो पूरी तरह से ख़त्म हो गई। जब श्री रामचन्द्रजी संसार में आये थे सब लोग जानते थे कि ये एक अवतार हैं। श्रीकृष्ण जी जब आये थे तब सब लोग जानते थे कि ये अवतार हैं। लेकिन आज ये ज़माना आ गया कि कोई किसी को पहचानता नहीं। ईसा मसीह के समय में भी ऐसा ही हुआ। लेकिन उस समय कुछ लोगों ने तो उनको पहचाना। लेकिन आज ये समय आ गया है कि सब भूतों और राक्षसों को लोग अवतार मानते हैं।

इस चक्कर से अपने को हटा लेना चाहिये और एक ही चीज़ माँगनी चाहिए कि ***'प्रभु तुम हमारे अन्दर जागो जिससे हम अपने को पहचानें।' आत्मा को पहचाने बग़ैर हम परमात्मा को नहीं जान सकते, नहीं जान सकते, नहीं जान सकते।*** बाक़ी सब बेकार है। ये सब circus है। ये सिर्फ़ जिसको कहते हैं बाहरी तमाशे हैं। इस बाहरी तमाशे से अपने को सन्तुष्ट रखने से कोई फ़ायदा नहीं। आप अपने को ही धोखा दे रहे हैं। परमात्मा को कौन धोखा दे सकता है। वो तो आप को ख़ूब अच्छे से जानता है। आप अपना ही नुक़्सान कर रहे हैं। आपको पाना चाहिये क्योंकि आपकी अपनी शक्ति है, आपकी अपनी सम्पदा है, आपके अन्दर सारा स्त्रोत है। आपके अन्दर भरा सब कुछ है। इसे आपको लेना चाहिए और फिर इसमें जमना

चाहिए।

सहजयोग में जब मैं आती हूँ तो लोग बहुत आते हैं, मैं जानती हूँ। लेकिन यहाँ पर सबका कहना है कि माँ आगे लोग नहीं जाते। अब यहाँ पर ऐसे लोग हमने देखे हैं कि जिनसे हमें कोई उम्मीद नहीं थी, वो कहाँ के कहाँ पहुँच गए। और जो कि बहुत हम सोचते थे, तो वहीं के वहीं जमे बैठे हैं। फिर लेकर आ गए वही सिरदर्द, वही आफ़तें, वही परेशानियाँ। वही ये हो रहा है, वही वो हो रहा है, अभी भी उनका level उतना ही ऊँचा उठा है।

"सहजयोग में जब तक आप लोगों को देंगे नहीं तब तक आपकी प्रगति नहीं होगी। देना पड़ेगा, जैसे-जैसे आप देते रहेंगे, वैसे-वैसे आप आगे बढ़ेंगे"। कोई अगर हम लोग बड़ी भारी Boat तैयार करते हैं, Ship तैयार करते हैं, अगर हम उसको पानी में नहीं छोड़ें तो उसका क्या अर्थ निकलता है? उसी प्रकार है, अगर मनुष्य परमात्मा को पाकर के और घर में बैठ जाए, तो ऐसे दीप से फ़ायदा क्या कि जो जलाकर के आप table के नीचे रख दीजिये? दीप इसलिए जलाया जाता है कि दूसरों को प्रकाश दे।

उससे आप अपने अन्दर अपने को भी देख सकते हैं और दूसरों को भी देख सकते हैं। आप अपने भी चक्र देख सकते हैं और दूसरों के भी देख सकते हैं। आप अपने भी आनन्द को देख सकते हैं और दूसरों की व्यथा को भी देख सकते हैं। और आप ये समझते हैं कि दूसरों को किस तरह से देना चाहिये। किस जगह ये चीज़ रुक रही है? किस तरह से इसको हमें बनाना चाहिये।

आज के लिये इतना काफी है। हम लोग अब जरा ध्यान करें, देखें कितने लोग पार होते हैं।

"आलस्य सहजयोग का सबसे बड़ा दुश्मन है।"

-श्री माताजी

परम पूज्य श्रीमाताजी का पत्र
दिनांक 17-8-1978

मातृप्रिय रमेश व निमा !

अत्यन्त प्यार से भेजी हुई राखियाँ मिल गयीं। 'राखी' का मतलब है रक्षा करने वाली शक्ति। इस शक्ति का बन्धन बहुत ही ज़ोरदार है और अत्यन्त कोमल भी है क्योंकि यह बहन के प्यार की निशानी है। जिसे एक बार राखी बाँधी वहाँ फिर निर्मल रक्षा का स्थान स्थापित किया।

यह परम्परा है। अब मनुष्य की संवेदन क्षमता इतनी कम हो गयी है, कि राखी बाँधना यह एक यान्त्रिक क्रिया (मशीनवर्क) हो गयी है। जहाँ श्रद्धा की गरिमा नहीं है वहाँ सारी सुन्दर मानवी परम्पराएँ शुष्क और बेजान हो जाती हैं।

सहजयोगियों के बन्धन में ही हमने संसार में जन्म लिया है। और पूरे रूप से उन्हीं के बन्धन में जी रहे हैं। हम तो desireless हैं, तब आप ही की इच्छाओं पर हमारा सब कुछ अवलम्बित (depend) है। राखी के साथ कुछ माँगना ज़रूरी है। वह सहज योगियों से पूछकर बताइये। सभी मिलकर एक पत्र लिखकर जो माँगना है वह लिखिए। हमारी तबियत बिल्कुल ठीक है क्योंकि आप सबकी वह इच्छा है! कान का एक छोटा–सा operation है। कोई चिन्ता की बात नहीं है। दूसरा ये कि, बिल्कुल तकलीफ़ नहीं है। कहना यह है कि चिन्ता की कोई बात नहीं है।

"रक्षा–बन्धन बहुत महत्वपूर्ण दिन है। उस दिन परिपूर्णता की माँग करनी चाहिए। बड़ी–बड़ी योजनाएँ बनानी चाहिएँ। अपना लक्ष्य हमेशा ऊँची बातों पर रखना चाहिए। छोटी–छोटी बातों पर ध्यान देकर सहजयोगियों को अपना लक्ष्य नष्ट नहीं करना चाहिये। अभी बहुत कुछ करना है। जिन सहजयोगियों ने प्रगति करी है उन्हें कार्यरत होना चाहिए। जनता का चित्त परमेश्वर प्राप्ति की ओर अग्रसर होना चाहिए। नये दो सेन्टर्स खोलने होंगे। लोगों की बीमारियाँ ठीक होनी चाहिएँ।

यह पत्र सभी सहजयोगियों को पढ़ने दीजिये।

आपको हमेशा याद करने वाली आपकी
माँ निर्मला
(निर्मला योग – 1983)

माताजी श्री निर्मला देवी का होली (29-3-1983) के पर्व पर विश्व सहज मन्दिर, नई दिल्ली में दिया गया प्रवचन

होली के शुभ अवसर पर आज दिवाली मनाई जाएगी। होली के दिन आप जानते ही हैं कि होलिका को जलाया गया था। यह अग्नि का बड़ा भारी काम है, कार्य है क्योंकि अग्नि देवता ने होलिका को वरदान दिया था कि किसी भी हालत में तुम जल नहीं सकती। और चाहे किसी भी तरह से मृत्यु आ जाए पर जल नहीं सकती। और वरदान देकर के वे बहुत पछताए क्योंकि प्रहलाद को गोदी में लेकर वह बैठ गई। और अग्नि देवता के सामने बड़ा प्रश्न खड़ा हुआ। धर्म का प्रश्न था कि मैंने उसे यह वचन दे दिया कि मैं तुम को जलाऊँगा नहीं, और इस वचन को मैं अब कैसे करूं? प्रहलाद, जो स्वयं साक्षात् अबोधिता हैं, जो साक्षात् गणेश का प्रादुर्भाव हैं, और उनको किस तरह से जलाया जाए? उन्हें तो कोई नहीं जला सकता और मेरी भी शक्ति से परे है। यह तो मेरी शक्ति से भी परे है। तो उन्होंने विचार यह किया कि अहंकार कैसा? कि इतनी बड़ी शक्ति के सामने मैं अपनी शक्ति की, कौन–सी बात है, मेरी ऐसी कोई–सी भी शक्ति नहीं है जो इनके आगे चल सके, इनकी शक्ति इतनी महान है, इनको तो मैं जला सकता ही नहीं चाहे कुछ भी कर लूँ। लेकिन इस वक्त दूसरा बड़ा भारी मेरे सामने धर्म है?तो कर्त्तव्य और धर्म में जो कशमकश हुई, उस वक्त यह सोचना चाहिए कि धर्म कर्त्तव्य से ऊँचा है। धर्म, कर्त्तव्य, एक सर्वसाधारण से ऊँची चीज़ है। और उससे भी ऊँची चीज़ है आत्मा का तत्त्व। यानी जो छोटा, परिधी में बँधा हुआ, सीमित, जो कुछ भी हमारा वलय है, गोल (Goal) है, उससे जो ऊँचा गोल (Goal) है, उससे जो ऊँचा वलय है, उसको करना अगर है, तो इस छोटे को छोड़ना पड़ेगा। और यही कृष्ण ने शिक्षा दी। कृष्ण ने कहा कि अगर आपको हित के लिए झूठ बोलना पड़े, तो आप झूठ बोलिए। सच बोलने की बात ठीक है, लेकिन किसी ऊँची चीज़ के लिए नीची चीज़ को छोड़ना पड़ेगा। जैसे कि कोई आदमी अब अन्दर आ जाए, और किसी को मारना चाहता है या खून करना चाहता है, एक तो उसकी अनाधिकार चेष्टा है। उसने आप से पूछा कि महाशय ऊपर हैं? तो आपने कहा कि हाँ हैं। मतलब सच कहना चाहिये, सच कह दिया। तो वह जाकर इसको मार डालेगा लेकिन उसकी जान बचाना, यह बहुत ऊँची चीज़ है, यह बहुत महत्वपूर्ण है, बड़ी चीज़ है। उस बड़ी बात के लिए, बड़े ध्येय के लिए या छोटी जो चीज़ है उसको छोड़ना पड़ेगा। यही कृष्ण ने अपने जीवन में अपनाया। कृष्ण के जीवन को बहुत कम लोग समझ पाये क्योंकि उस ज़माने में धर्म की यह दशा हो गईथी कि लोग धर्म को बहुत ही ज़्यादा गम्भीरतापूर्वक; बहुत उसको serious बनाकर सब बुद्धाचारी हो गए थे कि धर्म बहुत serious चीज़ है, उसमें आदमी को जो है बहुत ही serious रहना चाहिए। क्योंकि कर्मकाण्ड करना है, और कर्मकाण्ड करने में बड़ी आफ़त रहती है, कि अगर आपने इधर से उधर दीप जला दिया तो भगवान जी नाराज़ हो गये। इधर से उधर आपने अगर धूप–बत्ती जला दी, तो भगवानजी नाराज़। अगर left hand (बाएँ हाथ) से आपने कुछ कर दिया तो गया काम से। इन सब बातों की वजह से लोगों में conditioning (कट्टरता) आ गई और उस conditioning की वजह से लोग बड़े गम्भीरतापूर्वक धर्म करने लगे। इतने गम्भीर हो गये कि उसका आह्लाद, उसका उल्लास सब खत्म हो गया। राधा जी की, जो main (मुख्य) शक्ति थी, वह थी आह्लाददायिनी, सबको आह्लाद देना, यह उनकी main शक्ति थी। और इसीलिए उन्होंने फिर होली का त्यौहार मनाया। कृष्ण ने आकर के जितनी भी

पूजाएँ थीं सबको बन्द कर दिया और कहा कि अब पूजा–वूजा मत करो तुम, और उस आत्मा की ओर बढ़ो, जिसे तुम्हें पाना है। और छोटी–छोटी चीजों में मत खोओ। क्षुद्र चीजों में नहीं खोना है। लेकिन ऊँची चीज की ओर अपनी दृष्टि लगानी है। अब जो आदमी कहता है, "झूठ तो मैं कभी बोलता नहीं साहब", कभी–कभी ऐसा आदमी over (अति) स्पष्टवक्ता भी हो जाता है और अंहकार में दूसरों को दुखाता भी है, या नहीं तो उसी में उसका जीवन सत्यानाश हो जाता है। सच भी क्यों बोलना, धर्म भी क्यों करना, कर्त्तव्य भी क्यों करना क्योंकि आपको आत्मा होना है। और किसी चीज से आप इस तरह बन्धन में फँस जाएँ और उससे आप को seriousness आ जाए, आप बुढ़ा जायें–इसको बुढ़ाना कहते हैं–उसका कोई फायदा नहीं। धर्म जो है वह आदमी को बिल्कुल, पूरी तरह से एकदम जमा देता है, जैसे आइसक्रीम जम जाती है, ऐसे जमा देता है। उसमें शक्ति का संचार कैसे हो? उसका आनन्द कैसे वह उठाए? तो उन्होंने रंग वगैरह खेलना शुरू किया। सारे रंग जो हैं वे भी देवी के रंग हैं, सारे। सातों रंगों के रंग से रंग खेला जाता है। सारे चक्र में रंग हो अपने को लो। खेलो, आह्लाद, उल्लास, आनन्द से। गम्भीरतापूर्वक बैठने की कौन सी जरूरत है, अगर आप परमात्मा को पायें? वल्लभाचार्य जी के पास एक बार सूरदास जी गए। तो उनके सामने अपना रोना रोने लगे–बेचारे वे 'पार' नहीं थे, तो रोते ही रहते थे। तो रोना शुरु करा। तो वल्लभाचार्य तो साक्षात् श्री कृष्ण ही थे, यह आप जानते हैं तो उनसे रहा नहीं गया। उन्होंने कहा, "काहे घिघियावत हो?" मतलब, कि यह हर समय घिघियाते क्यों रहते हो? यह 'घिघियाने' के लिए और कोई शब्द भी नहीं मिलेगा आपको, कि हर समय यह रोने की क्या जरूरत है? परमात्मा के प्रेम में आदमी आनन्दविभोर हो जाता है। लेकिन यह अन्दर से आने वाली एक आह्लाददायिनी शक्ति है, जिसे यह होना चाहिए, न कि यह बहुत–से लोग ढोलकी लेकर बजाते फिरते हैं, "हरे रामा, हरे कृष्णा" उस तरह की चीज नहीं है। यह उसकी copy (नक़ल) है जो मैंने कल कहा कि reality (असलियत) और concept (मान्यता) में बहुत अन्तर है। जो असलियत है, उसमें आदमी विभोर होकर खुश होता है। उसमें कोई अश्लीलता नहीं है, कोई गन्दगी नहीं है। उसमें कोई जानबूझ करके नाटककारी नहीं है। अन्दर ही से आदमी खुश होकर के आह्लाद और उल्लास को महसूस करता है। और वही चीज जो है, बाद में, अनेक आघातों से भी दुःखदायी हो गई।

सब धर्मों में इसी प्रकार होते रहा। जैसे कि मुसलमानों में आपने देखा है कि वे लोग मारते हैं अपने आपको, "हाय हुसैन हम न हुए..... "यह रोने वाला धर्म, धर्म नहीं होता। जब धर्म में रोना ही है तो ऐसे धर्म में जाकर क्या करना? वैसे तो रोना ही होता है। तो दुख पाने वाला और दुख देने वाला धर्म, धर्म नहीं होता। लेकिन सब धर्मों में ऐसी बातें आ गईं। हिन्दू धर्म में भी आ गई माने ये कि जो आदमी, बिल्कुल मरगिल्ला हो, वही बड़ा भारी साधूसन्त माना जाता है....., वह मरगिल्ला होना चाहिए, उसकी हालत यह होनी चाहिए कि उसमें दरिद्रता होनी चाहिए, और वह ऐसी दशा में होना चाहिए कि आधा पागल, आधा अच्छा हो, कभी–कभी उठा dance (नाच) करना शुरु कर दिया या कभी रोने को बैठ गया, दुबला–पतला, हड्डियाँ, उसका पिचका हुआ मुँह, त्वचा में पचासों उसमें झुरियाँ पड़ी हुईं, आँखें बिल्कुल बटन जैसी बाहर, निस्तेज, तन्दरुस्ती चौपट और हर तरह की उसमें दुर्दशा। ऐसा आदमी कभी भी धार्मिक नहीं हो सकता। प्रसन्नचित् होना चाहिए, शान्त, खिली हुई तबियत, खुला हुआ ह्रदय और प्रकाश जैसे.... ..। तो होली का त्योहार, जैसे कल मैंने कहा कि

आज से यह तय करलें कि अब होली जो है, यह दीपावली हो जानी चाहिए। इस का आनन्द जो है विभोर होना चाहिए। होली का आनन्द सीमित है, जबकि हम एक ही होलिका जलाते हैं। लेकिन फिर वह collective consciousness (सामूहिक चेतना) में बहता है, जैसे हर आदमी, चाहे वह चमार हो, भंगी हो, घर में कोई भी हो, तो जैसे हमारे खानदान में, लखनऊ में, जहाँ के रहने वाले हैं, ज़मींदार लोग हैं ये लोग, तो क्या मजाल है कि जमादार बेचारे अन्दर भी आ जाएँ, घर के अन्दर भी आ जायें दहलीज़ के, लेकिन होली के रोज़ चाहे फिर कोई भी हो–मालिक हो चाहे नौकर हो चाहे कोई भी हो सब आपस में होली खेलते हैं यहाँ तक कि मालिक के कपड़े भी फाड़ें तो भी कोई कुछ नहीं कहता होली के रोज़। और इस तरह से एक समाजवाद और एक सामाजिक खुशी का त्यौहार अपने देश में शुरु हुआ। पर जैसे कि होली में भी आदमी फिर एक नीचे स्तर पर उतर जाना चाहता है, अश्लीलता पर आ जाता है। ऐसा हर एक जगह होता है, हर चीज़ सड़ने सी लग जाती है। सड़न इसलिए आती है क्योंकि उसमें जीवन्तता नहीं रहती। जिसमें जीवन्तता हो, वह चीज़ फिर सड़े नहीं। और इस तरह से ज़ब होने लग जाता है तो वही चीज़ बहुत ही गन्दी और बुरी दिखाने लगती है। जब होली का त्यौहार महाराष्ट्र में मनाया जाने लगा, तो तिलक वगैरह लोगों ने इसका बहुत विरोध किया क्योंकि इसमें गाली गलौज, गंदी बातें। यू.पी. के लोगों को वो 'भइया लोग' कहते हैं। और महाराष्ट्र में मराठी में गालियाँ हैं ही नहीं। ये सब जो गालियाँ होती हैं, गन्दी–गन्दी, तो मराठी लोग भी हिन्दी की ही गालियाँ देते हैं। उनके आने पर उन्होंने यही import (आयात) किया होगा! और अधिकतर गालियाँ हिन्दी की बोलते हैं और मराठी की गालियाँ होती ही नहीं। और पारसी लोग भी बहुत गालियाँ देते हैं। और हमारे पञ्जाब की भी गालियाँ कुछ–कुछ होती हैं। वह भी काफ़ी बम्बई में चलती हैं। तो यह गाली–गलोज आदि चीज़ें जो हैं यह है कि अन्दर की भड़ास जो है, उसे निकाल दीजिए, वग़ैरह–वग़ैरह कहते हैं। उसको निकाल देने से अच्छा होता है। पर यह बड़ी wrong (ग़लत) चीज है, यह कभी निकलती नहीं है, यह जबान पर चढ़ जाती हैं। हमने देखा है कि हमारे ससुराल में जो ज़मींदार हैं वहाँ, सिवाये हमारे husband (पतिदेव) के वहाँ हर आदमी गाली के सिवाये बात ही नहीं करता। मतलब बड़ों में भी। उनको गाली देने में कुछ लगता नहीं, फट से गाली दे देंगे। एक हमारे पति ही ऐसे हैं, वाकई में बहुत सुचारू। कभी भी मैंने उनके मुँह से गाली नहीं सुनी। आज तक कभी भी उन्होंने किसी को भी गाली नहीं दी, मैंने सुना नहीं। यह विशेष बात है। लेकिन अगर उनके घर में अगर किसी से बात करो, एक दो अगर गाली नहीं दी तो वे सोचते हैं कि उन्होंने प्रेम ही नहीं जताया। वहाँ तरीक़ा ही यह है कि दोस्त को भी अगर मिलेंगे तो पचास तो पहले गालियाँ देंगे, उस के बाद फिर गले मिलेंगे। यही चीज़ से ज़बान पर चढ़ जाती है गाली। उसका नुक़सान भी बहुत हो जाता है कि ये चीजें अगर चढ़ जाएं जिह्वा में तो जिह्वा शक्ति नष्ट हो जाती है। जिह्वा का आदर नहीं होने से, आप जो बोलते हैं, वह झूठ होगा। जो आदमी मुँह से गाली नहीं देता उसकी जिह्वा में शक्ति होती है। आपने बहुत बार देखा होगा कि भाषण करते करते अगर कुछ कहना भी होता है, तो मैं ठिठक जाती हूँ कि कहीं ऐसा न हो कि, जो बातें जैसे ईसा मसीह ने कही थी कि सूअर के आगे मोती नहीं डालना चाहिए। लेकिन अंग्रेज़ी में 'सूअर' शब्द जो हैं एक गाली है और बहुत बुरी गाली है। और मराठी में नहीं है। तो भी थोड़ी–सी है, पर ज़्यादा नहीं है। पर अंग्रेजी भाषा में बोलते वक़्त मैं नहीं बोलती हूँ। हिन्दी में बोलते वक्त ठीक

है सूअर किसी को कह दो तो ज्यादा से ज्यादा तय होगा कि बेवकूफ़ है। लेकिन वहाँ पर बहुत गन्दा शब्द होता है। इस तरह से जहाँ–जहाँ जिस तरह का व्यवहार होता है, उसकी मर्यादा रखते हुए आदमी को रहना चाहिए, नहीं तो जिह्वा की शक्ति, जो सरस्वती की शक्ति है, वो नष्ट हो जाती है। भाषण में भी इसलिए, जिसे वाचालता कहते हैं, तो वाचालता के साथ अश्लीलता तो बहुत बुरी चीज़ है। हम लोग सुबोध घराने के लोग हैं और सुबोध घराने के लोगों में एक तरह की सभ्यता, decency (शिष्टाता) होनी चाहिए। और उस सभ्यता को लेकर के हम लोगों को गाली गलोज से बात नहीं करनी चाहिए। और इसलिए कहते हैं कि होली पर कुछ न कुछ गाली देनी ही चाहिए। अगर नहीं दी, तो आपने होली मनाई ही नहीं। और इस तरह से घर में लोग भंग भी पीते हैं। अब बहुतों ने कहा कि 'एक दिन भंग पीने में क्या हर्ज है, माँ?' कोई हर्ज तो है नहीं। ऐसा कोई हर्ज नहीं है लेकिन भंग पीने से थोड़े भंगोड़ू हो जाते हैं। पर अगर आप हमें भंग पीने को कहें तो हम तो भंग नहीं पीयेंगे। क्योंकि वजह यह है कि हम तो पहले ही पीये हुए हैं, हमें कोई ज़रूरत नहीं पीने की। और, लोग इसलिए पीते हैं क्योंकि वे सोचते हैं कि जो serious (गम्भीर) लोग हैं वे ज़रा–से हल्के हो जाएँ, जैसे कि ego-oriented (अहंकारी) लोग हैं, वे भंग पी लें, थोड़ी–सी left-side को movement (ईड़ा नाड़ी की तरफ़ झुकाव) हो जाती है, तो ज़रा–से हिल जाते हैं, भंग में बकना शुरु कर देते हैं। लेकिन भयंकर प्रकार है भंग की, जब हम ससुराल में गए तो हमें क्या पता था कि भंग वंग पीते हैं। हमारे महाराष्ट्र में इस मामले में जरा सभ्य हैं। महाराष्ट्र में औरतों ने तो वहाँ भंग का नाम ही नहीं सुना होता, उनको अच्छा ही नहीं लगता ये सब चीज़। तो घर गए, तो हमें क्या पता था कि सब भंग पीए बैठे हैं। उन्होंने कहा कि खाना खाइये, तो हमने कहा, चलो ठीक है। खाने बैठे, तो इतनी बड़ी थाली में–कायस्थों में जैसा तरीक़ा होता है–बड़ी थाली में, बैठकर खाते हैं और मैं तो कितना खाती हूँ, आप जानते ही हैं। चलो, उस दिन त्यौहार का दिन था तो ज़्यादा खा लें। और वों खाती ही चली गई, खाती ही चली गईं, खाती ही चली गईं। हमने कहा कि भई क्या हो गया कुछ समझ में नहीं आया। और सब हँसते जाएँ और वे खाती ही जायें। हमारी जेठानी जी विधवा थीं और विधवा लोग भी भंग नहीं पीते, विधवाओं के लिए सब मना है। तो हमने कहा, "यह इनको क्या हो गया जीजी?" तो वे सब हँसते जाएँ। वे खाती जायें, और सब हँसते जाएँ। हमें कुछ समझ में नहीं आया कि यह क्या हो रहा है। बाद में हमें उन्होंने बताया कि ये सब लोग भंग पीये हुए हैं। तो मैं उठी थाली पर से, नमस्कार करके और हाथ धोया और अपनी अटैची उठाकर मैं ट्रेन में बैठकर चली मायके। किसी के पैर भी नहीं छुए हमारे यहाँ पैर छूने का रिवाज है। सबने कहा कि कहाँ गई? लखनऊ में उन्होंने ख़बर भेजी कि भई कहाँ चली गई दुल्हन? तो हमने कहा कि सब लोग भंग पीए हुये थे, इन लोगों से क्या बात हम करते? हम चले आए, हमने कहा कि सबको भंग ही पीने दो। तो बात यह है कि भंग वंग पीने की सहज योगियों को कोई ज़रूरत नहीं। जब चाहे तब मन में ही भंग पी ली। भंग का जो उपयोग है, leftside (वाम पार्श्व) में जाने का वह हम लोग ऐसे ही करते हैं। मतलब यह है कि अगर कोई आदमी बड़ा ही ego oriented (अंहकार) है, बहुत dry है, बड़ा शुष्क है, गम्भीर है, तो उसके लिए सहजयोग में पूर्ण व्यवस्था है कि वह अपने आज्ञा चक्र को ठीक कर ले। आज्ञा चक्र को अगर वह किसी तरह से खुलवा ले, अपने ही आज्ञा चक्र को ठीक करले तो वह left-side में जा सकता है। निद्रा के समय अगर आप आज्ञाचक्र को घुमाकर सो जाएँ तो अच्छी निद्रा आती है।

और अगर उसको फिर भंग की दशा से निकालना है, तो फिर आज्ञाचक्र को कस लें, right side (दायीं ओर) में। तो जब अपने ही हाथ में सारी चीज़ पड़ी हुई है, जब हमारी सारी ही शक्ति हमारे अन्दर समाई हुई है और जब इस का पूरा ही ज्ञान हमको मालूम है कि कौनसा स्विच किस वक्त घुमाना है तो उन बाहर की चीज़ों का अवलम्बन करने की ज़रूरत नहीं है। उस समय में हो सकता है भंग justified (न्यायसंगत) थी, शायद कृष्ण के जमाने में। शायद कृष्ण नहीं पीते थे–खाते हैं शायद–पता नहीं क्या करते हैं। तो उन्होंने नहीं किया लेकिन बाक़ी लोगों को जरूरत पड़ी क्योंकि जो serious (गम्भीर) लोग थे, वे भंग पी लें क्योंकि misidentifications (भ्रम) हैं "हम महाराजा हैं, हम महारानी हैं, हम घर के मालिक हैं, हम फ़लाँ हैं, हम कैसे महतर से मिलें", भई महतर तो घर में झाड़ू लगाते हैं। तो उसके लिए यह कि पहले तुम भंग पियो जिससे मेहतर और तुम एक हो जाओ। भूल जाओ कि तुम ब्राह्मण हो और वह मेहतर है। इसीलिए भंग पिला देते थे कि तुम्हें होश ही न रहे, जो misidentifications बने हुए हैं कि हम फ़लाँ हैं, हम ढिकाने हैं–भंग पी लीजिए, तो सब एक हो गए। अब इसी का उल्टा हिस्सा ऐसा है, जैसे कबीरदास जी ने कहा कि सुरति जब चढ़ती है, तो सब एक हो जाते हैं। तो उन्होंने सोचा कि जब तम्बाकू आदमी खाता है, तो वह भी एक जात हो जाता है। तो तम्बाकू का नाम सुरति रख दिया। जब हिसाब नहीं लगा पाये तो सोचा कि तम्बाकू ही सुरति होगी। तम्बाकू जब खाते हैं, तो जिसको तम्बाकू की तलब होती है तो चाहे वह राजा हो, तो उस वक्त सामने अगर ग़रीब भी बैठा हो, तो उसके सामने "तम्बाकू मेरे को भी दो।" माँगने लगता है तो उन्होंने कहा तम्बाकू सुरति हो सकता है क्योंकि इसमें राजा व रंक एक हो जाते है। यह इन्सान की ख़ासियत है कि किसको कहाँ जाकर मिलाएगा, ये वो ही जाने। लेकिन होली की जो विशेषता है, उसमें यही याद रखना चाहिए कि दीवाली अगर इसे बनानी है, तो उसमें decency (शालीनता) के साथ indecency(अभद्रता) नहीं, अभद्रता बिल्कुल नहीं आनी चाहिए। अभद्रता अगर आई तो वह फिर होली नहीं। श्री कृष्ण की नहीं, वह तो होली हुई ऐसे लोगों की जो 'पार' नहीं हैं। जब 'पार' हो जाते हैं तो होली खेलते वक्त कोई भी अश्लीलता नहीं होनी चाहिए। यानी ऐसे, जैसे सहजयोग में स्त्री पुरुष होली नहीं खेलते। पुरुष, पुरुषों के साथ और औरतें औरतों के साथ। सहज योग में, भाभी, देवर में हो सकती है। उसका भी एक नियम है, आप जानते हैं कि जो औरतें बड़ी हैं, वे अपने से छोटों के साथ होली खेल सकती हैं। और अगर पुरुष बड़े हों और स्त्री छोटी हो, तो किसी भी तरह का व्यवहार पर्दा होता है। उससे उलट, अगर स्त्री बड़ी हो, तो उसके साथ में पुरुष का व्यवहार खुला होता है, यह अपने यहाँ मालूम है। इसीलिए भाभी, देवर में होली होती है, लेकिन जेठ और दुल्हन में नहीं होती। जेठ से पर्दा होता है। और यह कायदा आपको आश्चर्य होगा कि सारे हिन्दुस्तान में है। और वह अपने आप ही चलता है, हम लोगों के अन्दर है, अन्तर्निहित हमारे संस्कारों में बैठा होता है, क्योंकि हमारे यहाँ उल्टा काम नहीं है, अधिकतर। कि जैसे इंग्लैण्ड में आप देखेंगे कि अस्सी साल की बुढ़िया है, अठारह साल के लड़के से शादी करेगी। अपने यहाँ तो कोई सोच भी नहीं सकता ऐसा। मानें, इनमें अपनी बुद्धि ही नहीं है। इधर यह तो सब चीजें होती नहीं हैं। हमारे संस्कारों की वजह से, जो हमारे अन्दर बैठे हुए हैं, उनकी वजह से हम बचे हुए हैं। भई, अस्सी साल की कोई भी स्त्री हो, वह तो माँ हो ही गई; उसे तो माँ मानना ही होगा। माँ क्या हुई, नानी हो गई। तो यहाँ किसी भी बेवकूफ़ के भी दिमाग़ में ऐसी बात नहीं आती। कितने भी पतित आदमी के दिमाग़ में

भी ऐसी बात नहीं आती और किसी भी बुढ़िया औरत के भी दिमाग़ में कभी ऐसी बात आयेगी नहीं? तो हमारे जो संस्कार हैं, भारतीय संस्कार हैं, इन्हीं की वजह से हम लोग धीरे–धीरे पूरी तरह से परिपक्वता पा गए हैं। वे लोग परिपक्व नहीं हैं। उनकी उम्र हमेशा गधेपचीसी में ही गुज़र जाती है, उससे ऊपर नहीं उठ पाये। हम लोग परिपक्व हो जाते हैं, क्योंकि हमारे अन्दर के संस्कार वे ऐसे हैं कि जो माने जाते हैं पूरी तरह से। जैसे एक पेड़ जो अगर क़ायदे से बढ़े, तो परिपक्व हो जायेगा और अगर हवा में ही लटके, तो परिपक्व नहीं हो सकता। वे बुड्ढे भी अगर होते जाते हैं, तो भी उनमें बचकानापन जाता ही नहीं। और जो हिन्दुस्तानियों का सम्बन्ध भी western (पाश्चात्य) लोगों से हो जाता है, वे भी वैसे ही हो जाते हैं, बुढ़ा जाते हैं। बड़ी–बड़ी लड़कियाँ होंगी उनकी, वे भी बड़ी बेवक़ूफ़ी की बातें करेगी जो कि लड़कियाँ वहाँ करती हैं। उनकी भी समझ में, सूझबूझ में परिपक्वता नहीं है और इस परिपक्वता को पाने के लिए मनुष्य को चाहिए कि वे जो क़ायदे–क़ानून बने हुए हैं, उन पर चलें और उसमें बहुत ही आनन्द होता है। कोई गड़बड़ नहीं हो सकती, कुछ अपने समाज में दोष नहीं आ सकता।

तो, होली का जो यह हिस्सा है, इसको सहज योग में छोड़ देना पड़ेगा, अश्लीलता का। और होली का जो प्रेम का हिस्सा है, उसे अपनाना है। बग़ैर भंग पिये हुए ही, हम सब एक हैं यह भावना आनी चाहिए। इस वक्त विशेष रूप से गले मिलना चाहिए क्योंकि कृष्ण का सारा कार्य प्रेम का है। प्रेम को पूरी तरह से लूटने की कोशिश करनी चाहिए क्योंकि उन्होंने कहा है कि यह सब परमात्मा के प्रेम की लीला है इसमें seriousness (गम्भीरता) नहीं है, लीला। लीलाधर जिसने लीला को धारण किया वह श्री कृष्ण थे और इसीलिए उन्होंने कहा कि सब चीज़ को लीलास्वरूप 'लीलाधर'। और यह लीलाधर की जो लीला है, उसमें अश्लीलता कहीं नहीं है। और हमारी जो संस्कृति है, सीधी सरल बैठी हुई है, इन लोगों की उल्टी खोपड़ी है। जैसे, औरतें जो हैं, वे बदन खोलकर घूमेंगी और मर्द अगर हो और एक आध औरत आ जाए, तो फौरन कोट के बटन लगाएगा। हमने कहा, कि मर्दों को कोट के बटन की क्या जरूरत है, औरतों को ही क़ायदे से पल्ला लेना चाहिए। पर इनकी सभी संस्कृति उल्टी सुल्टी बैठी हुई है। और वह बैठ ही गई है। जमी नहीं है, धीरे–धीरे सहजयोग में आने के बाद जम रही है। और अब जो आप लोगों की संस्कृति है, उसको आप लोग कृपया न छोड़ें। सहजयोग के लिए बहुत महान् चीज है कि आप हिन्दुस्तानी भी हैं और आप के पास संस्कृति की बड़ी भारी धरोहर है, उसको आप रखें पकड़ कर। उसी चीज पर जमें और उसी से आप परिपक्वता पायें। लेकिन इसका बिल्कुल मतलब यह नहीं कि आप बुद्धाचारी हो जाएँ। या किसी भी तरह आपमें seriousness (गम्भीरता) आ जाए। प्रसन्नचित्त। आपकी माँ जब हँसती है, तो आपने देखा है कि कभी–कभी तो सात मंजिल की हँसी आती है। सब लोग हैरान होते हैं कि गुरु लोग तो कभी मुस्कराते ही नहीं और माँ तो हँसती रहती है, और उनके मुँह से मुस्कराहट तो कभी जाती ही नहीं है। मैं तो एक मिनट से ज्यादा serious (गम्भीर) कभी हो ही नहीं सकती हूँ। जब serious भी होती हूँ तो भी नाटक ही रहता है। और बहुत–से लोग इस बात को जान गए हैं, इसलिए वो भी नहीं seriously (गम्भीरतापूर्वक) लेते–यह ग़लत बाते है! तो कृष्ण ने यह चाहा कि जो कुछ भी ग़लत–सलत हो गया है–राम के जीवन की वजह से, राम का जीवन बहुत आदर्श, ऊँचा और गम्भीर है। तो उन्होंने कहा कि ये सब लोग राम बनने जा रहे हैं, तो उन्होंने कहा कि ऐसी बात नहीं है राम का कार्य तो राम

करके चले गए, अब तो लीला का समय है। लीलामय बनना चाहिए और इसीलिए उन्होंने सारे संसार को लीला का ही पाठ पढ़ाया। लीला का मतलब कभी भी अश्लीलता या अपनी मर्यादाओं से गिरना, अपनी परम्पराओं से उतरना या अपनी जो प्राचीन धारणायें बहुत सुन्दर अभी तक बनी हुई हैं, उनको छोड़ना, ये नहीं है। हाँ रूढ़ि आदि जो गन्दी चीजें हैं उन्हें छोड़ देना चाहिए। लेकिन जो पवित्रता की भावनाएँ, आपस में रिश्तेदारी की हैं, उसमें पूरी तरह से सहजयोग में हम लोग मानते हैं और उसको निभाना चाहिए उसमें आगे बढ़ना चाहिए। भाई–बहन के रिश्ते–अब कल हमारे भाई साहब आये थे, बस देखा उन्होंने कि हमारी बहन–उनकी आँखों से आँसू ही बहे जा रहे थे। मैं देख रही थी कि वे बार–बार आँसू पोंछ रहे थे। वो कुछ और नहीं सोच सकते। सो यह जो पवित्रता की भावना है, प्रेम की भावना है, इसमें आदमी को चाहिए कि सहजयोग की दृष्टि से विचार करे। सहजयोग की दृष्टि से जो शोभायमान है। कोई–सा भी behaviour (व्यवहार) हो, जो अशोभनीय है, छोटी–छोटी बातों पर बात करना, छोटी–छोटी बातों में उलझना, बेकार में आपस में झगड़े करना किसी भी चीज की माँग करते रहना, कि यह चाहिए, वह चाहिए या कोई भी इस तरह की बात करना, ओछापन है, ओछापन है! और ऐसे लोग सहजयोग में नहीं जम सकते। एक बड़प्पन लेकर के, उदारता लेकर के अपने को चलाना चाहिए। सो आज की असल में जो पूजा हैं, वह बस थोड़ी–सी पूजा करनी है, वाइब्रेशन्स इतने हैं कि कोई पूजा की आवश्यकता नहीं है, मन्त्र भी कहने की आवश्यकता नहीं है। मन्त्र भी गाम्भीर्य में डाल देते हैं, पता नहीं क्यों। तो आज प्रसन्नचित्त होकर के, बस दो ही तीन मन्त्रों में हम आज की पूजा सम्पन्न करें। लेकिन इतना मैं कहूँगी कि होली को दिवाली बनाना है और दिवाली को होली। तब सहजयोग का integration (एकीकरण) पूरा होगा। दिवाली भी प्रसन्नचित्त होकर मनाएँ और दिवाली में भी लोग इतना रुपया खर्च करते हैं कि दिवाली के बाद दिवालिया होकर के, यानी इसी से शब्द 'दिवालिया' निकला है। क्या आप यह मान सकते हैं कि दिवाली से शब्द 'दिवालिया' निकला है? जिसने दिवाली मना ली वह दिवालिया हो गया। नहीं तो 'दिवालिया' शब्द कैसे निकला, यह ही बताइये? कुछ बड़े सुन्दर शब्द हैं, उनमें एक 'दिवालिया' शब्द है। दिवाली मनाई आपने? अब आप दिवालिया हो जाइये! तो हम लोगों को दिवालिया नहीं होना है। कोई ऐसी चीज़ नहीं करनी चाहिए जो कि मर्यादा से बाहर हो–दिवालिया नहीं होना। जितना अपने बूते का है उतना करिये उससे आगे परमात्मा पर छोड़िये। दिवालियापन करने की जरूरत नहीं और होली में दीवानगी करने की जरूरत नहीं। कोई–सा भी कार्य ऐसा नहीं करना चाहिए जो indecent (गन्दा) हो, जिसमे decorum न हो, जिसमें सभ्यता में गुरूरता हो। सभ्य तरीके से काम करना है। छोटी–छोटी चीजें आपके अन्दर आ जाती है। उस की मर्यादा, जैसे कल आर्टिस्ट लोग बजा रहे थे, उस वक्त किसी को उठना नहीं चाहिए, किसी art (कला) का मान करना चाहिए। आपने बहुत बार देखा होगा कि जब कोई artist (कलाकार) बजाता है, तो मैं खुद जमीन पर बैठती हूँ, आप भी सीखें। मान–पान किसका करना चाहिए, यह सहज योगियों को बहुत आना चाहिए क्योंकि protocol (आचार) की बात है। Artist (कलाकार) लोग भी, देखिये, पैर पर हमेशा–ये tradition(परम्परा) है–पैर पर हमेशा शॉल रख करके बजाएँगे, अगर असली आर्टिस्ट होंगे। क्योंकि हो सकता है कि श्रोतागण में कोई बैठे हों देवदेवता और मेरे पैर न दिखाई दें। अपने देश की इतनी बारीक–बारीक चीजें हैं कि मैं आपको क्या बताऊँ? इतना सुन्दर अपने देश में बना सब हुआ है। इतना सुन्दर परमात्मा का,

कहना चाहिए कि अंगवस्त्र है, कि इतनी गहनता है उसकी बनावट में, इतनी काव्यमय है सारी चीज, बहुत ही सुन्दर। काव्यमय! लेकिन हम लोग उसे नहीं समझ पाते और उसे अपने जीवन में नहीं ला पाते, तो वो सब तो गन्दगी हो जाती है। मान पान, अब कल जेठ बैठे हुए थे हमारे रिश्ते के, तो आप देखिए पूरे समय, पूरे लैक्चर में, वह एक मर्यादा बनी रही कि हमारे जेठ, बड़े भाई बैठे हुए हैं, उनके आगे कहाँ तक पहुँचना चाहिए। अब तो हम आदिशक्ति हैं, हमारे लिए कौन जेठ और हमारे लिए कौन बड़े भाई? लेकिन जब इस रिश्ते में बैठे हुए हैं, तो उसका मानपान पूरी तरह रखना है। हर रिश्ते का मान–पान रखना है। आप कुछ भी हो जाओ, सहजयोगी भी हो गए, तो भी आपको मान–पान रखना चाहिए। यह नहीं कि आप उसको तोड़ दें। और इस तरह से जब आप करेंगे, धीरे–धीरे आपकी समझ में आ जाएगा कि इसमें बड़ा ही माधुर्य है। और यह बहुत ही मीठी चीज है। तो आज के होली के दिन सिर्फ होलिका–दहन का एक मन्त्र कहना है–'होलिका मर्दिनी'–इस मन्त्र से ही आप लोग मेरे पैर धोयें। और बच्चों को गणेश की स्तुति तो होनी ही चाहिए। तो गणेश की स्तुति करके बच्चे मेरे पैर धो लें और फिर तीन मन्त्रों से मेरे पैर धो लें और कोई खास चीज़ करने की जरूरत नहीं है। क्योंकि फिर वह seriousness आ जाती है। क्योंकि कृष्ण ने सब पूजाएँ बन्द कराके सिर्फ होली को ही कहा। छोड़ो, पूजा बन्द करो। Complete (पूरी) पूजा बन्द कर दो। उसी तरह आप लोगों को कृष्ण याद करते हुए आज सब पूजायें बन्द कर देनी चाहियें। और सिर्फ यही करना चाहिए कि आज उल्लास और आह्लाद का दिन है, और सब होली खेलो। क्योंकि आज होली आई है, और होली का ही आनन्द उठाना है। और इसकी दिवाली बनाने का मतलब है कि जो मैंने बताया इसकी जो सुचारू रूप से सभ्यता को लेते हुए, अत्यन्त कलात्मक, ऐसी सुन्दर रचना नई तरह की हमें करनी चाहिए। इसीलिए होली को दिवाली बनाना है और दिवाली को होली बनाना है।

आप सबको मेरा अनन्त आशीर्वाद!

निर्मलशक्ति युवासंघ संगोष्ठी

निर्मल दरबार दिल्ली

(24, 25 जून-2006)

परम पूज्य श्रीमाताजी की कृपा से दिल्ली में निर्मलशक्ति युवा संघ (युवाशक्ति) की एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। नोयडा, गुड़गाँव, फरीदाबाद और गाजियाबाद से भी युवा सहज–योगियों ने इस संगोष्ठी में भाग लिया। उत्साह से परिपूर्ण लगभग सात सौ युवाओं ने निर्मल दरबार में दो दिन (24,25 जून 2006) भरपूर आनन्द उठाया। इस संगोष्ठी का उद्देश्य युवा सहजियों में हमारी गुरु साक्षात् आदिशक्ति परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी के प्रति उनके श्रद्धा एवं समर्पण भाव को और अधिक दृढ़ करना था। युवा सहजयोगी परमात्मा के अबोध माध्यम हैं–"उन्हें प्रेम की पावन शक्ति (निर्मलशक्ति) के माध्यम के रूप में स्वयं को गरिमामय बनाना है। प्रेममय, समर्पित और पावन युवा सामूहिकता के रूप में (युवासंघ)।

लक्ष्य ये था कि इस युग की वास्तविकता और साक्षात परमात्मा की अवतरण हमारी परमेश्वरी माँ को हम अपने हृदय में महसूस करें। ताकि हम शरीर तंत्र पर उस वास्तविकता को महसूस कर सकें और जब हृदय से उनके सम्मुख प्रार्थना करें और विनम्रता पूर्वक उनके पावन नाम उच्चारण करें तो उनकी पूर्ण शक्तियों की अभिव्यक्ति हो। ये शक्तियाँ (तकनीक या विधियाँ नहीं) स्वतः, बिना किसी प्रयत्न के हमारे रोग निवारण करती हैं, हमें सन्तुलन, शान्ति एवं पथ प्रदर्शन प्रदान करती है, ताकि हम अपनी प्रिय सर्वशक्तिमान एवं सर्वज्ञ श्रीमाताजी को रिझा सकें।

इस उद्देश्य प्राप्ति का एकमात्र मार्ग था युवा सहजयोगियों की सामूहिकता को गहन ध्यान में उतरने के लिए प्रोत्साहित करना था। ध्यान की गहनता केवल निर्विचार समाधि की शान्तिमय अवस्था प्राप्त करने के बाद ही पाई जा सकती है। चैतन्य–चेतना–हमारे पथ–प्रदर्शन का यन्त्र–को विकसित करना भी इस संगोष्ठी का उद्देश्य था क्योंकि यह संवेदना प्राप्त करने के बाद ही हम अपनी परम पावनी माँ की परमेश्वरी सीख को समझ सकते हैं और परम चैतन्य की कृपा को हमारी रक्षा करने, हमें रोग–मुक्त करने और हमें परिवर्तित करने का अवसर देती है।

इस अवस्था को प्राप्त करने के पश्चात्

हम अन्य लोगों तक सहजयोग तथा श्रीमाताजी के प्रेम को पहुँचाने, तथा कुण्डलिनी जागृति का अमूल्य तोहफा साधको को देने के लिए बेहतर यन्त्र बन जाएंगे।

इन उद्देश्यों के लिए संगोष्ठी के सभी सत्र 'ध्यान' से आरम्भ हुए। भाग लेने वाले बहुत से युवाओं को परस्पर चैतन्य लहरियाँ लेना–देना सिखाया गया। इस बात पर बल दिया गया कि ध्यान धारणा करते हुए साधक व्यक्तिगत रूप से सीधे श्रीमाताजी से आशीर्वाद की याचना करता है। श्रीमाताजी से प्रवाहित होने वाली चैतन्य लहरियाँ हमें शुद्ध करती हैं, सन्तुलन प्रदान करती हैं और निर्विचार समाधि की अवस्था में पहुँचाती हैं। निर्विचार समाधि केवल तभी प्राप्त होती है जब हम प्रयत्न करना छोड़कर सीधे इस अवस्था के लिए आदिशक्ति से प्रार्थना करते हैं। (किसी प्रकार की विधियाँ, तकनीक या कर्म हमें इस अवस्था तक नहीं पहुँचा सकती) संगोष्ठी में सम्मिलित सभी युवा सहजियों को पहले से कहीं अधिक चैतन्य लहरियों का अनुभव हुआ और उन्होंने अपने अन्दर निरन्तर निर्विचार समाधि का भी आनन्द उठाया।

सभी युवाओं ने बन्धन लेने का भी अनुभव प्राप्त किया–मशीनवत बन्धन नहीं, अपना चित्त श्रीमाताजी तथा अपने हाथों से बहने वाली चैतन्य लहरियों पर रखकर श्रीमाताजी के प्रेम की शक्ति को अपने चहुँ और प्रसारित करना। श्रीमाताजी की इच्छा के अनुरूप निर्मलशक्ति युवासंघ के गठन के विषय में भी युवाओं को बताया गया। उन्हें ये भी बताया गया कि सहजयोग के आशीर्वाद से किस प्रकार अपनी पढ़ाई–लिखाई में लाभ उठाया जा सकता है। संगोष्ठी में युवाओं में 'संघ' (सामूहिकता) की भावना को बढ़ावा देने तथा इसके आनन्द उठाने के लिए समय नियत था। उन्होंने भी अनुभव किया कि जब सामूहिकता के सभी सदस्य ध्यान में होते हैं और श्री चरणों से जुड़े रहकर कार्य करते हैं तो सभी कुछ कितनी सुन्दरता पूर्वक होता है। भाग लेने वाले सभी युवाओं को पच्चीस टीमों में बाँट दिया गया और हर टीम को सहजयोग की सूझ–बूझ, उन्नति और प्रसिद्धि से सम्बन्धित एक–एक परियोजना दी गई:–भाषण/संगीत/इश्तहार/झण्डों/व्यंग्य तथा नाटक/नृत्य नाटक/सहज समाचार प्रसारण/पूजा मंच/पृष्ठपटल/सार्वजनिक कार्यक्रम/श्रीमाताजी के जीवन, देवताओं और चक्रों आदि के विषय में सत्य आदि–आदि। आयोजन इस प्रकार से किया गया कि संगोष्ठी में भाग लेने वाले सभी सात सौ सदस्य

किसी न किसी सामूहिक गतिविधि में व्यस्त थे। सामूहिक रूप से तुरन्त, एक घण्टे के अन्दर सभी प्रस्तुतियाँ तैयार हो गईं। इनकी बहुत सराहना हुई और सभी ने इनका बहुत आनन्द उठाया।

दूसरे दिन प्रातःकाल सभी सहभागियों ने प्रातःकालीन साप्ताहिक ध्यान धारणा में भाग लिया जिसमें लगभग सौ नए साधक भी आए। सभी युवा–सहजी उत्साह–पूर्वक अपनी कुण्डलिनी उठाने और उन्हें आत्म साक्षात्कार देने के कार्य में लगे हुए थे। ज्येष्ठ सहजयोगियों के साथ उन्होंने इस अनुभव का आनन्द उठाया।

संगोष्ठी में भाग ले रहे सदस्यों ने आधुनिक विद्युत मीडिया तथा इसके नकारात्मक प्रभाव को बन्धन दिया और सभी ने शपथ ली कि टेलिविज़न आदि पर दिखाए जाने वाले किसी भी आवांछित प्रसारण को नहीं देखेंगे।

हर रोज़ श्रीमाताजी के प्रवचनों के वीडियो दिखाए गए तथा परमेश्वरी माँ के जीवन पर आधारित एक अत्यन्त हृदयस्पर्शी वृत्तचित्र दिखाया गया। सभी सहजयोगियों की मन–स्थिति ध्यान करने की थी तथा सभी को बहुत तेज चैतन्य–लहरियाँ महसूस हुईं। ध्यानसत्र के बाद श्रीमाताजी के विषय में इस सुन्दर फिल्म ने सबको पूर्णतः निर्विचार कर दिया और सभी के हृदय खुल गए। जब–जब भी हम हृदय से महसूस करते हैं कि श्रीमाताजी साक्षात् सर्वशक्तिमान परमात्मा हैं और अपने हृदय में विनम्रता पूर्वक आदिशक्ति के सम्मुख नतमस्तक होते हैं तो हमें कितनी उच्च अवस्था प्राप्त होती है।

एक चमत्कार भी हुआ, दिल्ली में गर्मी का प्रकोप था और पारा बहुत बढ़ा हुआ था। परन्तु ज्योंही सेमिनार आरम्भ हुआ, कुछ ही मिनटों में पूरे आकाश में बादल छा गए और विशेष रूप से उसी क्षेत्र में तथा आस–पास मूसलाधार वर्षा हुई। श्रीमाताजी के सर्वज्ञ प्रेम ने संगोष्ठी के दिनों में वातावरण को अत्यन्त ठण्डा और खुशनुमा बना दिया (एक प्रसिद्ध समाचार पत्र ने तो अपने प्रथम पृष्ठ पर इस आश्चर्यजनक घटना का वर्णन करते हुए कहा कि प्रकृति ने दिल्ली के केवल एक क्षेत्र विशेष में वर्षा की है परन्तु दिल्ली के अन्य सभी भाग शुष्क और तपे हुए हैं।

एक अन्य चमत्कार ये था कि यद्यपि संगोष्ठी में केवल 250 सहभागियों के लिए प्रबन्ध किया गया था परन्तु, दोपहर के भोजन के समय तक भाग लेने वाले युवाओं की संख्या लगभग तीन गुनी हो चुकी थी। भारी वर्षा और तूफान आने के बावजूद भी इतने अधिक सहभागी पहुँचे। परन्तु श्रीमाताजी के प्रेम ने हर चीज़ का ठीक से प्रबन्ध कर दिया। देवी अन्नपूर्णा की कृपा से तुरन्त सारे प्रबन्ध हो गए और सभी सहभागियों के लिए भोजन तैयार हो गया। अपने इस प्रेम की वर्षा के लिए हमने हृदय से श्रीमाताजी का धन्यवाद किया।

संगोष्ठी के बाद बच्चों के माता–पिता ने हमें बताया कि उनके बच्चे अब घर पर ठीक प्रकार से ध्यान कर रहे हैं और स्वयं पानी पैर क्रिया भी करते हैं वे निर्विचार समाधि, चैतन्य–लहरियों तथा परमेश्वरी माँ के प्रति श्रद्धा भाव का भी आनन्द ले रहे हैं। उन्होंने टी.वी. देखना भी कम कर दिया है।

कुल मिलाकर यह परमेश्वरी माँ के आशीर्वादों से परिपूर्ण स्मरणीय संगोष्ठी थी– आश्चर्यजनक चैतन्य लहरियाँ और ध्यान में परमेश्वरी माँ के प्रति समर्पित युवा हृदय। हम आदि शक्ति माँ के चरण–कमलों में कृतज्ञता पूर्वक प्रणाम करते हैं और प्रार्थना करते हैं कि सर्वशक्तिमान माँ हमें सामूहिक रूप से अपने प्रेम का आनन्द उठाने के ऐसे बहुत से अवसर प्रदान करती रहें।

जय श्रीमाताजी

दिल्ली सामूहिकता

परम पूज्य श्रीमाताजी का प्रवचन

बम्बई, 4 मई, 1983

परमात्मा को खोजने वाले सभी साधकों को मेरा प्रणाम!

मनुष्य यह नहीं जानता है कि वह अपनी सारी इच्छाओं में सिर्फ़ परमात्मा ही को खोजता है। अगर वह किसी प्रकार की वस्तु मात्र के पीछे दौड़ता है, वह भी उस परमात्मा ही को खोजता है, हालाँकि रास्ता ग़लत है। अगर वह बड़ी कीर्ति और मान–सम्पदा पाने के लिए संसार में कार्य करता है, तो भी वह परमात्मा को ही खोजता है। और जब वह कोई शक्तिशाली व्यक्ति बनकर संसार में विचरण करता है, तब भी वह परमात्मा को ही खोजता है। लेकिन परमात्मा को खोजने का रास्ता ज़रा उल्टा बन पड़ा। जैसे कि वस्तुमात्र जो है, उसको जब हम खोजते हैं–पैसा और सम्पत्ति, सम्पदा–इसकी ओर जब हम दौड़ते हैं तो व्यवहार में देखा जाता है कि ऐसे मनुष्य सुखी नहीं होते। उन पैसों की विवशताएं, अधिक पैसा होने के कारण बुरी आदतें लग जाना, बच्चों का व्यर्थ जाना आदि 'अनेक' अनर्थ हो जाते हैं। जिससे मनुष्य सोचता है कि "ये पैसा मैंने किस लिए कमाया? यह मैंने वस्तुमात्र किसलिए ली?" जिस वक़्त यहाँ से जाना होता है तो मनुष्य हाथ फैलाकर चला जाता है। लेकिन यही वस्तु, जब आप परमात्मा को पा लेते हैं, जब आप आत्मा पा लेते हैं और जब आप का चित्त आत्मा पर स्थिर हो जाता है, तब यही खोज एक बड़ा सुन्दर स्वरूप धारण कर लेती है। परमात्मा के प्रकाश में वस्तुमात्र की एक नयी दिशा दिखाई देने लग जाती है। मनुष्य की सौंदर्य दृष्टि एक गहनता से हर चीज़ को देखती है। जैसे कि आज यहाँ बड़ा सुन्दर वातावरण है, और सारे तरफ़ से वृक्ष हैं। ये सब आप देख रहे हैं। जब आपने परमात्मा को पाया नहीं, तब आप यह सोचते हैं कि "अगर ऐसे वृक्ष मैं भी लगा लूँ तो कैसा रहेगा? मेरे घर में ऐसे वृक्ष होने चाहिएं। मेरे पास ऐसा आँगन होना चाहिए। ऐसे प्रांगण में, मैं ही बैठूँ और मैं ही उठूँ।" फिर वह मिलने के बाद वह दूसरी बात सोचने लगते हैं कि यह चीज़ लें वह चीज़ लें। इस तरह से जो यह पाया हुआ है इसका भी आनन्द नहीं उठाते। आज यह हुआ कि हमने एक मोटर ख़रीद ली, उसके बाद मोटर के लिए भी हाय तोबा करके वह किसी तरह से प्राप्त की। उस के बाद हमें चाहिए कि अब एक बड़ा मकान बनालें और वह भी बनाने के बाद में हाय तोबा हुई तो फिर और चाहे और कुछ कर लें। इस तरह से चीज़ आपने पाई थी वास्तविक, जिसके लिए आपने इतनी परेशानी उठाई थी, उसका आनन्द तो इतना भी आपने प्राप्त नहीं किया और लगे दूसरी जगह दौड़ने। जब तक वह मिली नहीं तब तक हवस रही; और जैसे ही वह चीज़ मिल गयी, वो ख़त्म हो गयी। लेकिन परमात्मा को पाने के बाद में ये सारी जो सृष्टि है, ये बनाने में परमात्मा ने जो कुछ भी आनन्द की सृष्टि की हुई है, उस कलाकार ने जो कुछ इसमें रचा हुआ है, बारीक–सारीक सब कुछ, वो सारा का सारा आनन्द अन्दर झरने लग जाता है। जो चीज़ आज ऐसी लगती हैं कि मिलनी चाहिए–और मिलने पर फिर व्यर्थ हो जाती है, वही चीज़ अपने अर्थ में खड़ी हो जाती है। अगर और कोई वस्तुमात्र आपने ली, उसका आनन्द ही जब आप उठा नहीं सकते हैं, तो उसको पाने की इच्छा करना भी तो बेकार ही है। जब उस चीज़ का आनन्द एक क्षण भी नहीं आप उठा सकते तो उस चीज़ के लिए इतनी ज़्यादा आफ़त मचाने की क्या ज़रूरत है?

वस्तुमात्र में भी–कोई वस्तु को आपने, समझ लीजिये, चाहा कि मैं इसे खरीद लूँ। आपका मन किया कि इसे हम ख़रीद लें, कोई अच्छी–सी

चीज़ दिखाई दी। जैसे औरतों को है कि कोई ज़ेवर ख़रीद लें। अब ख़रीदने के बाद उसका सर दर्द हो गया। इसको Insure (बीमा) कराओ कि इसे चोर न ले जायें, तो इसे पहनो मत, तो बैंक में रखो, अब यह परेशानी एक बनी रही। और इसका आनन्द तो उठा ही नहीं सके। और जब भी पहने, तो जो देखे वह ही जल जाए इससे। माने उसकी आनन्द की जो स्थिति है वह तो एकदम ख़त्म हो चुकी और बचा उसका जो कुछ भी नीरसता का जो अनुभव है, वह गढ़ता है, और दुखदायी होता है। उसी की जगह जब आप परमात्मा को प्राप्त करते हैं और आप कोई चीज़ खरीदते हैं तो यही सोचते हैं कि इसको मैं किसे दूँ। ये किसके लिए सुखदायी होगी। इसका शौक़ किसको आया। क्योंकि अपने तो सब शौक़ पूरे हो गये। शौक़ एक ही बच जाता है कि किसे क्या दूँ। फिर ख़्याल बनता है कि देखो उस दिन उन्होंने कहा था कि हमारे पास ये चीज़ नहीं है। तो आपने वह चीज़ उन्हें ले जाके देदी। इसलिए नहीं कि आप कोई बड़ा उपकार करते हैं। दे दी, बस। जैसे पेड़ है, कोई उपकार करता थोड़े ही है, अपने को कहता है उसमें फल आ गये, वह फल दे देता है। इसी प्रकार आपने जाकर के वह चीज़ किसी को दे दी। अब देखिये उसमें आपके प्रेम की जो भावना आ गयी, आपने अपनी आत्मा से जो चीज़ उनको दे दी, उनका ख़्याल करके। 'छोटी–सी' भी चीज़। जैसे शबरी के बेर। श्री रामचन्द्र जी ने इतने प्रेम से खाये। और उसके बाद उसकी इतनी प्रशंसा की, सीता जी को भी। तो लक्ष्मण जी नाराज़ हो रहे थे। सीता जी ने कहा, 'देवरजी आप ज़रा चखकर तो देखिये। ऐसे बेर मैंने ज़िन्दगी में नहीं खाये।" तो भाभी पर विश्वास करके उन्होंने एक बेर खाया, कहने लगे ये तो स्वर्गीय है। उस शबरी के बेर में इतना आनन्द इसलिए आया कि नित्तान्त प्रेम से उसने वह बेर तोड़ के, अपने दाँत से देखकर के बिल्कुल 'अबोध' तरीके से innocently उसने परमात्मा के चरणों में रखा। 'उसी प्रकार हो जाता है।

तो जो वस्तुमात्र से जो तकलीफ़ें होती हैं वह ख़त्म हो जाती हैं। सारी दृष्टि ही बदल जाती है। और समझ लीजिये अगर किसी और की वस्तु है तब तो बहुत ही अच्छा है। माने उसका सरदर्द तो है नहीं, मजा आप उठा रहे हैं। जैसे समझ लीजिए एक बड़ा बढ़िया क़ालीन किसी के यहाँ बिछा हुआ है। अपना है नहीं भगवान की कृपा से। दूसरे का है। उस वक्त आप अगर उस क़ालीन की ओर देखते हैं तो आप ये नहीं सोचते कि इसने कहाँ से ख़रीदा, कौन–से बाज़ार से। उस वक्त एक तान होकर उसे देखते हैं, और अगर आपको परमात्मा का साक्षात्कार हो चुका है, तो आपके अन्दर कोई विचार ही नहीं आएगा उसके बारे में। आप कोई विचार ही नहीं करेंगे कि ये कितने पैसे का ख़रीदा, कुछ नहीं। जो उसमें आनन्द है 'पूरा का पूरा' तो जिस कलाकार ने उसे बनाया है उसका पूरा का पूरा आप आनन्द उठा रहे हैं और जिसका है, वह सरदर्द लिए बैठा है कि इस पर कोई चल न जाए नहीं तो ख़राब हो जाएगा। और अपनी नज़र से तो आप उसका पूरा का पूरा आनन्द, स्वाद ले रहे हैं क्योंकि आपका उसके साथ कोई सम्बन्ध ही बना नहीं है, आप दूर ही से उसे देख रहे हैं और दूर ही के दर्शन सुन्दर होते हैं। जब आप दूर हटकर उस चीज़ को देखते हैं, तभी पूरी–की–पूरी चीज़ आपके अन्दर उतर सकती है।

बहुत–से लोगों का यह कहना है कि "माँ इस देश में परमात्मा की बात बहुत की जाती है लेकिन यहाँ लोग ग़रीब क्यों हैं?" अमीरी की वजह से इन देशों का जो हाल हुआ कि इसलिए मैं कहती हूँ, भगवान करे थोड़े दिन और हम लोग ग़रीब बने रहें। न तो बच्चों का पता है न घर का

पता है, न बीवी का पता है, न पति का पता है, न कोई प्रेम का पता है। जब जिन देशों में बच्चों को लेकर के मार दिया जाता है पैदा होते ही। इतनी दुष्टता वहाँ पर होती है, इतनी महादुष्टता वहाँ लोग करते हैं कि जिसकी कोई इन्तहा नहीं। कोई सोच भी नहीं सकता कि इस मर्यादा–रहित दुष्टता के आप भागीदार हैं। अभी एक साहब से वार्तालाप हुआ तो उन्होंने कहा कि परदेस में लोग कम से कम ईमानदार हैं। मैंने कहा ईमानदार तो औरंगज़ेब भी था। अपनी टोपियाँ सिल–सिल करके बेचता था और सरकार से उसने एक पैसा नहीं लिया। लेकिन लेता तो अच्छा रहता कुछ। कम से कम इतने ब्राह्मणों को मारता न। हिटलर भी बड़ा ईमानदार आदमी था। एक पैसा जो था वह अपने सरकारी ख़जाने से नहीं निकालता था। लेकिन उसकी ईमानदारी का क्या फ़ायदा? इतनी दुष्टता उसमें आ गयीं, मानो इन्सान में अगर कोई चीज बहुत ज़्यादा आ जाती है, तो वह दूसरी तरफ़ एक दूसरा ही आकार ले लेती है। अगर वह ईमानदारी को, उसने सोचा कि देश जो है मेरा बहुत बड़ा है तो उसमें ईमानदारी से रहना है, तब ये गुण बड़ा अच्छा है। पर उसके कारण अगर आपके अन्दर कोई गन्दी बात घुस जाये तो अच्छा है कि आप खुद सन्तुलित रहें।

अब बहुत–से लोग अपने को बड़े सत्ताधीश समझते हैं। सत्ता के लिए दौड़ते हैं। सत्ता के लिए दौड़–दौड़ कर कोई सुखी नहीं हुआ। एक तो यह कि किस वक्त उतर जाएँ, पता नहीं। किस वक्त इन को शह मिले और किस वक्त उतर जाएँ सत्ता से, किसी को पता नहीं। आज ताज है और कल काँटे लग जाएँ। इस सत्ता का कोई ठिकाना नहीं और उस सत्ता से आप कुछ अपना भी और दूसरों का भी ख़ास लाभ नहीं कर सकते। पर जो परमात्मा की सत्ता पर बैठा है, जिसमें परमात्मा की सत्ता है, जिसके अन्दर परमात्मा बोलता है, जिसके अन्दर परमात्मा की शक्ति बहती है, वो आदमी 'असल' में बादशाह है, सत्ताधीश है। बादशाहत है उसके पास। वह bribe (रिश्वत) काहे को लेने चला? बादशाह काई bribe लेता है क्या? वह क्यों बेईमानी करने चला? वह बादशाह है। उस को अगर आप ज़मीन पर सुला दीजिये तो भी बादशाह है, उसको महलों में रखें तो भी बादशाह है। उसको भूखा रहना पड़े तो भी वह बादशाह है, वह कोई चीज़ की माँग नहीं करता। वो ही बादशाहत में होता है, जिसको किसी भी चीज़ की माँग नहीं है, कोई भी चीज़ की दरकार नहीं है, किसी चीज़ की ग़र्ज नहीं है। वह ही असल बादशाह है, बाक़ी ये तो नक़ली हैं बादशाह। जो कि बादशाहत थोड़ी बहुत मिलने के बाद "यह चाहिए, वह चाहिए, वह चाहिए" माने आपकी बादशाहत क्या है? अन्दर की जिसके अन्दर बादशाहत जागृत हो गयी, वो हर हालत में रह सकता है, हर परिस्थिति में रह सकता है, हर दशा में रह सकता है और कोई दुनिया कि चीज़ नहीं जो उसे झुका दे। हमारे सामने ऐसे अनेक उदाहरण हैं। इस भारतवर्ष में तो अनेक हो ही गये और बाहर भी बहुत–से हो गये। क्योंकि वो अपनी बादशाहत में सन्तुष्ट हैं, उसकी सत्ता जो है 'स्थायी' सत्ता है। इस तरह की क्षण भंगुर नहीं कि जो क्षण में यहाँ पर तो बड़े बने बैठे हैं और उसके बाद पड़ गये ज़मीन पर। जैसे ध्रुव का तारा टिक गया है, ऐसे ही परमात्मा को पाया हुआ मनुष्य टिका रहता है। उसको भय नाम की चीज़ मालूम नहीं, उसको लालसा नाम की चीज़ मालूम नहीं, उसको लालच नाम की चीज़ मालूम नहीं। ऐसा मनुष्य जब इस देश में तैयार होगा तो हम लोगों को कोई भी ऊपर से क़ायदे क़ानून लादने की जरूरत नहीं पड़ेगी, अपने आप वह मस्ती में रहेगा। वह बेक़ायदा चलेगा ही नहीं। क्योंकि क़ायदे भी कहाँ से आये हैं? क़ायदे भी परमात्मा ही के सृजन किये हुए

अपने अन्दर आये हुए हैं। उसका जितना भी विपर्यास हुआ, जो मनुष्यों ने कर दिया है, वह भी बदल जाएगा। पर उस मानव को तैयार करना होगा जिसने परमात्मा को पाया है। ऐसे मानव जब तक तैयार नहीं होयेंगे वे लड़खड़ाते ही रहेंगे। पहले जबकि उनको किसी भी बड़े भारी चुनाव में जाना पड़ता है, तो चुनाव में आके कहेंगे कि "साहब हम तो ग़रीबों के लिए ये करेंगे वह करेंगे, ऐसा करेंगे, दुनिया भर के सारे आश्वासन होंगे। और जब वह सत्ताधीश हो जायेंगे तो "साहब हमको यह चाहिये, हमको यह चाहिए। और हम तो सबसे बड़े ग़रीब हो गये।" क्योंकि ग़रीबों के लिए करने की कोई ज़रूरत ही दिखाई नहीं देती है। उनसे भी ज़्यादा ग़रीब ये हो जाने की वजह से वह सब अपने लिए ही headache (सरदर्द)। लेकिन जिसने परमात्मा को एक बार पा लिया, वो कोई चीज़ की माँग नहीं करता। वह कभी माँगता ही नहीं है, वह कोई भिखारी कभी नहीं हो सकता। मैंने कहा, 'वह बादशाह हो जाता है।' ये बादशाहत अपने अन्दर हमको स्थापित करनी है। अब कोई लोग कहते हैं कि साहब "हिन्दुस्तान में इतनी चोरी–चकारी और ये सब चलीं। इसका इलाज क्या है"? इसका इलाज बहुत सीधा है! आत्म साक्षात्कार को प्राप्त करें। क्योंकि अभी अन्धेरे में हैं, अज्ञान में हैं, इसलिए ऐसी रद्दी चीज़ों के पीछे भागते हैं। इसमें रखा क्या है? यह तो सब यहीं छोड़ जाने का है। एक छोटी–सी चीज जो रोज़ देख रहे हैं वह ही भूल जाते हैं। किसी के मैय्यत पर चले गए, वहाँ से आए और उसके बाद लगे bribe लेने, अरे! अभी मैय्यत देखकर आ रहे हो, bribe क्या ले रहे हो? अभी देखा नहीं वह चला गया वैसे के वैसे! उसी तरह से आप भी जाने वाले हैं।' लेकिन यह कहने से नहीं होने वाला, यह सिर्फ़ आत्म–साक्षात्कार होने के बाद में घटित होता है। उसके बाद में आदमी छनता है और उस के अन्दर की यह जो छोटी–छोटी क्षुद्र बातें फट से निकल जाती है।

अब उसके बाद कुछ लोग ऐसे हैं कि जो सोचते हैं कि हमारे बच्चों के लिए यह करना चाहिए, 'हमारी' बीवी, 'हमारा' बच्चा, 'हमारा' यह, 'हमारा' वह। इस ममत्व के चक्कर के सबने थपेड़ खाए हुए हैं, कोई एक ने नहीं खाए। जब बच्चे बड़े हो जाते हैं तो ऐसे आदमी को अच्छा थपेड़ देते हैं। लोग रोज देखते हैं, रोजमर्रा देखते हैं। आपको तो मालूम है वाल्मीकि की कथा, मुझे फिर से बताने की जरूरत नहीं। पर जो तथ्य है उससे आप बहुत ज़्यादा हैं। क्योंकि बच्चे बहुत ज़्यादा बेशर्मी से materialistic (भौतिक) हो गए हैं। सब देश में ही लोग इस तरह से हो गए हैं वो बात ही पैसे की करते हैं। वह बोलते ही हैं कि हमारी क़ीमत इतने हज़ार रुपये, हमारी क़ीमत.....। सबने अपनी कीमत लगा ली है। ऐसी हालत में इन लोगों का चित्त इस बेकार की चीज़ से कैसे हटाना चाहिए? उसका हटाने का भी वही मार्ग है, जैसे मैंने कहा कि आत्मा का दर्शन इनके अन्दर होना चाहिए। आत्मा के प्रकाश में ही मनुष्य देख सकता है कि 'कितनी' क्षुद्र वस्तु है। जैसे समझ लीजिए अन्धेरे में कोई चीज़ चमक रही है, तो उन्होंने सोचा कि "साहब बढ़िया कोई चीज़ चमक रही है, कोई हीरा–वीरा होगा।" लगे उसके पीछे दौड़ने! और वो हीरा इधर से उधर भाग रहा है। उसके बाद में प्रकाश में आ गया, देखा यह तो जुगनू था, जुगनू के पीछे हम लोग परेशान रहे। ये तो जुगनू था! इस के लिए क्यों इतनी परेशानी उठानी! इसलिए ये प्रकाश हमारे अन्दर आना ज़रूरी है।

अब बहुत–से लोग कहते हैं कि हम बहुत धर्मात्मा हैं। ऐसे भी बहुत–से लोग हैं, वह कहते हैं कि 'हम तो बड़े धर्मात्मा हैं। हम बड़े

धार्मिक कार्य करते हैं, हमने इतने हॉस्पिटल (hospital) बना दिये, इतने स्कूल बना दिये, ये बना दिये, वो बना दिये।' ये भी काम से आज तक किसी ने तृप्ति तो मैंने पायी देखी नहीं। किसी को मैंने तृप्त देखा नहीं, शान्त देखा नहीं। इससे प्रेममय देखा नहीं, उसके अन्दर कोई सौन्दर्य भी देखा नहीं। क्योंकि ये जो आप काम कर रहे हैं, परमात्मा से सम्बन्ध किये बग़ैर, योग के बग़ैर, आपके अन्दर एक संस्था तैयार हो रही है, जिसे हम अहंकार कहते हैं। अहंकार नाम है उसका। वो अहंकार हमारे अन्दर जमते जाता है और कभी–कभी तो वो अहंकार ऐसा हो जाता है कि मानो जैसा कोई बड़ा भारी सर पर एक अंहकार का 'जहाज़' बना हुआ है। इस अंहकार के सहारे हम चलते रहते हैं और इस अंहकार से हम बड़े सुखी होते हैं कि कोई अगर हम से कहे कि भई "आप बड़े धर्मात्मा हैं, इन्होंने बड़ी संसार की सेवा करी और इन्होंने ये दिया और वो किया।" लेकिन इसमें कोई सत्य तो है नहीं। क्योंकि सेवा भी किसकी करने की है? जब परमात्मा का आशीर्वाद मिल जाता है तो चराचर सारी सृष्टि में फैली हुई परमेश्वरी शक्ति पर आप का हाथ आ जाता है। आप यहीं बैठे–बैठे सबकी सेवा कर रहे हैं, अगर सेवा उसका नाम हो, तो। लेकिन जब वही आपके अन्दर से बह रही हो और जब आप उनसे ही एकाकार हो गये तो आप किस किसकी सेवा कर रहे हैं? अगर ये हाथ मेरा दुख रहा है तो इस हाथ को अगर मैं रगड़ रही हूँ तो क्या मैं इसकी सेवा कर रही हूँ? इस तरह का झूठा अहंकार मनुष्य के मन में फिर जागृत नहीं होता। और अहंकार मनुष्य को महा मूर्ख बना देता है। ये 'पहली देन' है अहंकार की, कि अहंकार से मनुष्य महामूर्ख, जिसको अंग्रेजी में stupid कहते हैं, वो हो जाता है। और उसके एक–एक अनुभव मैं देखती हूँ तो मुझे आश्चर्य लगता है कि इनका कब अहंकार उतरेगा और ये देखेंगे अपने को शीशे में। जैसे नारद जी ने एक बार देखा था अपने को तालाब में, कि कितने बड़े अहंकार से आप 'बिल्कुल' अन्धकार में पड़े हुए हैं।

अब इससे आगे कुछ लोग इस तरह के हैं कि जो कहते हैं कि 'हम बड़े भक्ति करते हैं और हम खूब भगवान को मानते हैं।' ज़्यादातर लोग भगवान के पास इसलिए जाते हैं "मुझे पास करा दो, मुझे नौकरी दे दो, मुझे ये कर दो।" ये ऐसे कहने से कुछ भी नहीं होने वाला। क्योंकि कृष्ण ने कहा है कि 'योग क्षेम वहाम्यम्' पहले योग को प्राप्त करो और 'फिर' क्षेम वो बना देते हैं। जैसे इनके पास मिलने के लिए सुदामा जी गये थे। पहले उनसे योग घटित हुआ। ये कहानी बड़ी मार्मिक है। जब उन का योग श्री कृष्ण से घटित हुआ, 'उसके बाद' उन का क्षेम हुआ। जब तक उनका योग घटित नहीं हुआ था तब तक उनका क्षेम नहीं हुआ था। इसलिए जब तक आपका योग घटित नहीं होगा आपका क्षेम हो ही नहीं सकता है। कभी–कभी किसी प्रकार से हो भी जाए–थोड़ा–बहुत, इधर–उधर–तो भी वह मानना नहीं चाहिए, कि आपने पाया है। पर बिल्कुल 'पूरी' तरह से आपका क्षेम तभी घटित हो सकता है जब आप योग को प्राप्त करें। और 'इस योग को प्राप्त करना आपकी एक ही शुद्ध इच्छा है। बाक़ी जितनी भी आपकी इच्छाएँ हैं, मैंने बता दिया, वे सब 'बेकार' हैं, और उनको प्राप्त करने से आप कभी–भी सुखी नहीं हो सकते, आनन्द की तो बात छोड़ ही दीजिए।

और एक तरह के लोग दुनिया में होते हैं, कि जो सोचते हैं कि बड़ा हमने sacrifice (त्याग) कर दिया। हम तो बड़ा suffer (कष्ट सहन) करेंगे।' जैसे बहुत–से लोग होते हैं, सोचते हैं भगवान के लिए उपवास करो। भगवान के लिए

अपने शरीर पर छुरी चलाओ। भगवान के लिए 'जितनी भी' घृणित चीजें हैं, उन्हें अपने शरीर पर करो। ऐसे पागल लोगों को भी बताना चाहिए कि 'ये शरीर परमात्मा ने बड़ी मेहनत से बनाया है। एक छोटे से amoeba (अमीबा) से आपको इन्सान बनाया है बड़ी मेहनत करके, किसी वजह से। और आप को पाना क्या है? किसलिए बनाया परमात्मा ने? आपने तो अपने को कुछ भी नहीं बनाया। जो बनाया 'उसी' की जीवन्त शक्ति ने बनाया है। वह क्यों बनाया है आपको? 'कि आप एक दिन परमात्मा के साम्राज्य में आएं, उसमें पदार्पण करें, आपका स्वागत हो। इसलिए उन्होंने आपको ये सुन्दर स्वरूप दिया हुआ है।' इसलिए नहीं दिया है कि आप इधर–उधर भटकते रहें। लेकिन उधर दृष्टि हमारी नहीं है न! हम लोग यही सोचते हैं कि अगर माताजी के आत्म–साक्षात्कार की तरफ़ हम मुड़ें तो भई फिर क्या होगा! हम सन्यासी हो जाएँगे। 'सहजयोग तो सन्यास के महाविरोध में है। 'महाविरोध!' अगर कोई सन्यासी आ जाए तो हम उससे कहते हैं' कि जाकर कपड़े बदल कर आओ। सहजयोग सामान्य लोगों के लिए, जो गृहस्थी में रहते हैं, उनके लिए है। गृहस्थी बड़ा भारी 'महायज्ञ' है, उस महायज्ञ में जो गुज़रा है वही सहजयोग में आता है, सन्यासियों में हमारा विश्वास बिल्कुल नहीं है। क्योंकि ये कपड़े पहनकर के आप किसको जता रहे हैं? जो सन्यासी होता है वह तो सन्यासी है अन्दर से, वह क्या बाह्य में अपने ऊपर में कुछ sign board (नामपट) लगा कर नहीं घूमता है कि "मैं सन्यासी हूँ"। ये झूठे sign board लगाने की क्या जरूरत है? और ग़लत–फ़हमी में अपने को रखना, अपने ही को आप cheat (धोखा) कर रहे हैं। तो दूसरों को करेंगे ही। जिसने अपने ही को धोखा दिया है वह दूसरों को भी धोखा ही देगा। तो इस प्रकार के भी विचार के कुछ लोग होते हैं कि जो अपने शरीर को दुख देना और दुनिया भर के दुःख सहना और परेशानी उठाना–इसका बड़ा अच्छा उदाहरण हैं Jews (यहूदी) लोग। अपने यहाँ भी ऐसे बहुत सारे हैं जो उपवास, तपास और दुनिया भर की आफ़तें करके, सिवाए बीमारी के और कुछ नहीं उठाते। पर Jew लोगों ने ये कहा कि हम ईसा मसीह को नहीं मानते हैं क्योंकि वह कहता है कि "मैं तुम्हारे सारे पापों को खींच लूंगा अपने अन्दर।' और सही बात है। जब उनकी जागृति हो जाती है हमारे आज्ञा चक्र पर, तो वह खींच लेते हैं। लेकिन हम ईसामसीह को नहीं मानेंगे क्योंकि वह Jew था। इसलिए Jew लोग उनको नहीं मान सकते। और चाहे कोई माने तो माने। और इसलिए उन्होंने कहा कि हम तो ये विश्वास करते हैं कि मनुष्य को खूब suffer (कष्ट सहन) करना चाहिए। खूब sufferings (कष्ट भोगना) होनी चाहिए। वह इतना दुःख उठाये। दुख उठाने से ही परमात्मा मिलता है। यह उनका अपना विचार था । यानी यहाँ तक कि कोई saint (सन्त) है उसको कोई दुख दे रहा है तो वे कहते हैं कि ठीक ही है तुमको परमात्मा अच्छे से मिल जाएगा। जितना दुख हो, झेलो। जैसे ज्ञानेश्वर जी को हमने काफी सताया। रामदास स्वामी को हमने कभी माना नहीं। तुकाराम की तो हालत ही ख़राब कर दी। और भी जितने भी–नानक साहब हैं, कबीरदास हैं–सबको परेशान किया और यही कहकर कि "तुम तो सन्त हो, तुम तो गुस्सा ही नहीं हो सकते। हम सन्त नहीं हैं। माने यह कि जैसे सारे गुस्से का ठेका हमने ले रखा है और सारा सहने का ठेका आपने ले रखा है!" और ऐसे जो Jew लोग थे देखिए, उन पर कितनी बड़ी आफ़त आ गयी। भगवान ने एक हिटलर भेज दिया उनके लिए–जाओ इनको suffer करना है, करने दो। अब वह उल्टे बैठ गए हैं वह सब दुनिया को

suffer कराएँगे। तो इस तरह की विक्षिप्त कल्पनाएँ अगर दिमाग़ में हों, तो भी मनुष्य कभी भी सुख नहीं पा सकता इस तरह की बड़ी ही ज़्यादा तीव्र भावनाएँ किसी के प्रति कभी भी नहीं बनानी चाहिए। 'क्योंकि सभी परमात्मा की सन्तान हैं। किसी से भी द्वेष बनाना नहीं चाहिए।' कोई भी आप प्रश्न उठाइये। जैसे कि कोई कहेगा कि आज हिन्दू धर्म जो है, ये बड़ी विपत्ति में पड़ा है। मैं तो कहती हूँ कि कभी विपत्ति में पड़ ही नहीं सकता, अगर वह धर्म है तो। उसको कोई हाथ भी नहीं लगा सकता, अगर वह धर्म है, तो। पर वह politics (राजनीति) नहीं हैं। वह धर्म है। और धर्म को कोई छू ही नहीं सकता क्योंकि धर्म शाश्वत है। धर्म को कौन छू सकता है? आनी जानी और मरना–जीना तो चलता रहता है, लेकिन धर्म नष्ट नहीं हो सकता। अगर आप ही धर्मच्युत हो जाएँ तो धर्म नष्ट हो जाएगा, और नहीं तो आपका धर्म कोई नहीं तोड़ सकता। किसी की मजाल नहीं कि आपका धर्म तोड़े। पर धर्म को पहले अपने अन्दर जागृत करना चाहिए। जब तक आपके अन्दर धर्म जागृत नहीं होगा, जोकि आप देख रहे हैं (चित्र में) गोल बना हुआ है, इसके अन्दर आपके दस धर्म हैं, ये धर्म जब आपके अन्दर जागृत हो जायेंगे तो जो धर्म आप नष्ट कर रहे हैं रोज़, रोज, किसी न किसी वजह से–क्योंकि आपकी बहुत सारी इच्छाएँ है, आपमें लालसाएँ हैं, वासनाएँ हैं, बहुत–सी आदतें पड़ गयी हैं, इसकी वजह से जो आपके अन्दर का धर्म रोज नष्ट हो रहा है वह जागृत होते ही आप धार्मिक हो जायेंगे। क्योंकि आप दूसरा काम कर ही नहीं सकते। जैसे मैं कभी भी नहीं कहती हूँ कि आप शराब मत पीओ। मैं नहीं कहती हूँ, क्योंकि कहने से आधे लोग उठ जायेंगे, फायदा क्या? मैं कहती हूँ: अच्छा पार हो जाओ। माँ के तरीक़े उल्टे होते हैं न। चलो भई पहले पार हो जाओ। फिर मैं कहूँगी: अच्छा अब पीकर देखो शराब, पी नहीं सकते, उल्टी हो जायेगी उल्टी हो जायेगी। धर्म जब जागृत हो गया अन्दर तो वह फेंक देगा आपकी शराब को। आप पी नहीं सकते। एक साहब ने कोशिश की। उनके तो खून निकल आया। उन्होंने कहा, भगवान बचाए रखे मैं तो जाऊँ। और उनको इतनी बदबू आने लग गयी जो कभी उनको शराब में बदबू नहीं आती थी, वो उनको बदबू आने लग गयी। कहने लगे : अजीब से सड़े से बुच जैसी उसमें बदबू आ रही थी। अब मैंने कहा इसे सात साल से चढ़ाते रहे पेट में, उसकी नहीं आयी? कहने लगे पता नहीं मेरी जीभ मरी हुई थी। धर्म इस तरह इतने ज़ोर से आपके अन्दर जागृत हो जाता है कि फिर पाप और पुण्य जो है जैसे नीर व क्षीर विवेक हो जाता है उस तरह से अलग–अलग हो जाता है और आप जान जाते हैं कि ये मेरे लिए रास नहीं आएगा, यह मेरे माफ़िक नहीं आने वाला। ये मुझे (suit) ही नहीं कर सकता, इसकी allergy है मुझको। आप allergic ही हो जाते हैं। और इसलिए पहले सहजयोग में बताया ही नहीं जाता है कि तुम ये नहीं करो, वो नहीं करो। वह अपने–आप आप करने लग जाते हैं। क्योंकि आपके अन्दर आपका जो "परम–गुरु आत्मा है", शिव स्वरूप आत्मा जागृत हो करके वही आपको समझा देता है कि भई देखो ये चीज़ चलने वाली नहीं है अब हम से। क्योंकि आप अब आत्मा हो गये इसलिए अब आत्मा बोलेगा। और बाकी जो चीज़ है गौण हो जाती है, और मुख्य हो जाता है "आत्मा"।

इस प्रकार हमारी आज तक की संसार की गतिविधियाँ रहीं और मनुष्य इस प्रकार बढ़ता रहा। लेकिन आज समाँ दूसरा है। जैसे कि पहले एक बीज से अंकुर निकला, अंकुर निकलने के बाद पेड़ का तना बना, उसमें से पत्तियाँ, शाखाएँ सब

निकलीं लेकिन ये 'सब' जिस लिए हुआ है, वो है इसका 'फल'। तो आज मैं देख रही हूँ मेरे आगे अनेक फूल बैठे हुए हैं। इन फूलों का फल बनाने का काम यही मैं करती हूँ और कुछ नहीं। और आप सब वह फल हो सकते हैं। तो 'सारे' ही धर्मों ने इसको पुष्ट किया है। सारे ही जितने प्रवर्तक हो गये हैं सब ने इसको पुष्ट किया है। जितने दुनिया के महात्मा हो गये उन्होंने इसे पुष्ट किया है। जितने सन्त, साधु, दृष्टा हो गये उन्होंने इसे संजोया है और पनपाया है। और 'जितने भी' इस संसार के अवतरण हुए हैं, सबने इसमें कार्य किया है। ये कोई एक का कार्य नहीं कि 'हम साहब फलाँ के पुजारी हैं, हम इनको मानते हैं, उनको नहीं मानते।' ये तो ऐसे हो गया: मैं इस आँख को मानता हूँ, इस आँख को नहीं मानता। ये 'सारे के सारे' आपके शरीर के अन्दर बसे हुए हैं, और इन 'सबका' समग्र integrated जो प्रयत्न है, उस प्रयत्न का फल आपका आत्म–साक्षात्कार है। और वह समाँ आज आ गया है कि इन सब के फलस्वरूप जो इच्छाएँ थीं इन सब महानुभावों की, वो पूर्ति हों। वह आज का समय है। और यह काम पता नहीं क्यों, मुझे मिला! हालाँकि ये काम और कोई कर भी नहीं सकता। ये तो माँ ही कर सकती है। जब पहाड़ों जैसी कुण्डलिनियाँ उठानी पड़ती हैं तब पता चलता है, पसीने छूट जाते हैं। और इसलिए एक माँ पर ये काम आ बैठा है। मैं कोई आपकी गुरु–शुरु नहीं हूँ। न ही मुझे आप से कुछ लेना–देना है। सिर्फ़ जो मेरा काम है वह मुझे करना है। और आप अगर चाहें तो मैं कर सकती हूँ, पर आप न चाहें तो जबरदस्ती यह काम हो नहीं सकता। अगर आप की इच्छा हो तभी हो सकता है। अगर आपके अन्दर यह शुद्ध इच्छा नहीं हो और यह इच्छा जागृत नहीं हो तो मैं इसे नहीं कर सकती। अब बहुत–से लोग तो मुझ से मारा–मारी करने पर आ जाते हैं। लड़ाई करते हैं, झगड़ा करते हैं। 'ऐसे कैसे हो सकता है। और कुण्डलिनी ऐसे कैसे जागृत हो सकती है?' पर होती है तो फिर क्या करें। अगर होती है तो उसे मैं क्या करूँ? 'ऐसे कैसे?' मैंने कहा, 'होती ज़रूर है। इसमें कोई शंका नहीं।' अब अगर इस तरह से आप मुझसे लड़ाई करने पर अमादा रहें कि कैसे होती है, तो मैं आप से क्या कहूँ? होती है, और ज़रूर होनी चाहिए। और ये कार्य करने का समय, ये आज की शुभ बेला आयी हुई है। इसे कृतयुग कहते हैं। और इस कृतयुग में कार्य होगा, जिसमें 'जितने' भी बड़े–बड़े अवतार, महानुभाव दृष्टा और मुनि, तीर्थंकर आदि जितने लोग हो गये, उन सबके आपको आशीर्वाद हैं। और उनके आशीर्वाद–स्वरूप आप यह समग्र integrated आशीर्वाद प्राप्त करते है। इसमें कैसे होता है, क्या होता है, ये आप स्वयं जानें और देखें, बजाए इसके कि अपनी बुद्धि के दायरे में रहें। क्योंकि अभी तक धर्म भी एक बुद्धि के ही दायरे में है, हर एक चीज़ बुद्धि के दायरे में हैं। मैं देखती हूँ इतनी बड़ी–बड़ी किताबें लोगों ने लिख मारीं। लेकिन वह कुछ समझते ही नहीं। फ़ायदा क्या हुआ? 'पसायदान'–अभी कोई बता रहा था, उस पर इतनी बड़ी किताब किसी ने लिखी है। मैंने कहा उनकी तो खोपड़ी खराब हो गयी। वो सारा सहजयोग उन्होंने लिखा है, और क्या लिखा है? सारे सहजयोग का वर्णन है और उसी की उन्होंने भविष्यवाणी की है। अगर आप ठीक से पढ़ें तो आपकी समझ में आ जाएगा कि सारा सहजयोग बता गये हैं। अब उस पर क्या आप इतनी बड़ी–बड़ी किताबें लिख रहे हैं? उसमें लिखने का 'क्या' है? वह तो पाने का होता है। और जो यथार्थ है, वह पाया जाता है, उसके बारे में बातचीत नहीं की जाती।

बहरहाल मुझे आशा है आज आप में

बहुत–से लोग यहाँ पार हुए बैठे हैं। आप ही जैसे दिखाई देते हैं, आप ही जैसे। हो सकता है शुरु में बहुत–से सहज–योगी उस दशा में न पाये जाएं जैसे कि बड़े योगी–जन होते हैं। लेकिन उनकी जागृति हो गयी है। और वह योग की तरफ़ वर्द्धमान हो रहे हैं। वो बढ़ रहे हैं। उनको देखकर के आप इसमें से पलायन मत करिये। बहुत–से लोग होते हैं कि 'साहब, मैं गया था, वहाँ एक साहब थे, वह कुछ ऐसा–वैसा कर रहे थे।' तो इसका मतलब है आपने उनको देखा और आप अपने में पलायन कर गये। माने आप चाहते कुछ हैं नहीं। आप 'अपने' बारे में सोचिये। जो यहाँ लोग आए हैं, उनमें से हो सकता है, कुछ लोग ऐसे हों कि उनकी जागृति भी न हुई हो। पर बराबर आप अगर negative (विकार–युक्त) आदमी होंगे तो उसी के पास जाके धमकेंगे और उसी की वजह से आप भाग भी खड़े होंगे।

इसलिए, यह जानना चाहिए कि सहजयोग को प्राप्त करने के लिए सिर्फ़ आप में 'शुद्ध–इच्छा' होनी चाहिए। और कोई चीज़ की ज़रूरत नहीं। अगर आपके अन्दर शुद्ध इच्छा हो, जो स्वयं साक्षात् कुण्डलिनी है, वही शुद्ध इच्छा है। और जब यह शुद्ध इच्छा की शक्ति जागृत हो जाती है, तभी कुण्डलिनी का जागरण होता है। यह शुद्ध इच्छा आप सबके अन्दर है। लेकिन अभी जागृत नहीं है। इसको जागृत करना और सहस्रार में इसका छेदन कराना, यही कार्य करना आज का सहजयोग है।

पर इसमें 'बहुत' कुछ आ जाता है। क्योंकि जब आप एक फल को देखते हैं, तो उसमें सभी कुछ दिया हुआ, इस पेड़ का, सारा कुछ उसके अन्दर निहित होता है। अगर आप उसका एक बीज उठा कर देखें तो उसके अन्दर उतने सारे पेड़ बने हुए रहते हैं जो उसमें से निकलने वाले हैं। इस प्रकार सहजयोग अत्यन्त गहन और प्रगाढ़ है, किन्तु 'अत्यन्त' 'विशाल' है। इसमें 'सभी' जितना कुछ परमात्मा का कार्य हुआ है संसार में, वह सारा का सारा निहित है।

आशा है आप लोग अपने आत्म–साक्षात्कार को प्राप्त करेंगे। एक और आज के दिन की विशेष बात यह है कि सहस्रार को खोलने का कार्य, जो कि महत्त्वपूर्ण था, मेरे लिए वही मुख्य कार्य था। मैंने अनेक लोगों की कुण्डलिनियों को सूक्ष्म रूप से जाना था। और यह सोचती थी कि मनुष्य के क्या क्या दोष हैं और उन दोषों का अगर मैं सामूहिक तरह से इस कार्य को करना चाहती हूँ–जोकि समय है सामूहिक का–तो किस प्रकार सारे जो कुछ भी इनके मेलमिलाप permutation-combinations हैं, उसको किस तरह से छेड़ा जाए कि एक ही झटके में सब लोग पार हो जाएँ। और इस पर मैंने बहुत गहन विचार किया था। और उसमें जो कुछ मुझे समझ में आया उस हिसाब से ५ मई के दिन सहस्रार खोला गया–उस हिसाब से। और आज की रात, पूरी रात, मैं समुद्र के किनारे अकेले जागी थी और जागते वक्त पूरे समय मैं सोच रही थी कि किस तरह से इस सहस्रार का आवरण दूर होगा। और जैसे ही मौक़ा मिला, सवेरे के समय ये सहस्रार खोला गया। आज का दिन इसलिए भी बहुत शुभ है।

और दूसरी आज की और भी बड़ी शुभ बात है कि गौरी जी का सप्तमी का दिन है, और उस वक्त भी ऐसा ही था। क्योंकि गौरी जो है, वह कुण्डलिनी है और वही जो कन्या मानी जाती है, virgin (कुमारी) है। वह इसलिए virgin है कि अभी उसका योग शिव से नहीं हुआ है। इस लिए वह virgin है। और इस शुभ मुहूर्त पर, जब कि वह गौरी स्थान पर है, यह कार्य घटित हुआ। और जब

यह कार्य घटित हुआ, उसके बाद मैंने सहजयोग का कार्य करना शुरु किया।

और आप जानते हैं आज 'हज़ारों' में लोग पार हो रहे हैं। आज अगर मैं किसी देहात में बोलती होती तो इससे सात गुना लोग बैठे होते। और बैठते ही हैं। शहरों में आना तो time (समय) बर्बाद करना है। क्योंकि लोग वैसे ही पार नहीं होते। होने के बाद मेरा सर चाट जाते हैं। और वह भी मेरा, परेशान कर देते हैं और कोई जमते नहीं। अगर आप सौ आदमियों को पार कराइये, उसमें पचास आदमी तो सर चाटने के लिए आते हैं और पचास आदमी जो बच जाते हैं, उसमें से पच्चीस फ़ीसदी आदमी ऐसे होते हैं कि जो गहनता से सहजयोग को लेते हैं, क्योंकि वह level (स्तर) नहीं है लोगों के, वह शक्ति नहीं है उनके अन्दर, वह सूझ–बूझ नहीं है। और अगर गाँव के लोग जो होते हैं, जो बहुत सीधे–सरल परमात्मा के बहुत नजदीक पृथ्वी माता से नजदीक रहते हैं उनकी जो शक्ति है वह इतनी 'गहन' है और इस क़दर वह आंकलन करते हैं कि आश्चर्य होता है। और 'एक रात' में ही उनमें इतना बदल आ जाता है। और ऐसा ' 'जैसे कि 'प्रकाश' फैल जाए, एकदम 'आग' जैसे लग जाए।' इस तरह से 'कोई' भी village (गाँव) में मैं जाती हूँ तो छः सात हजार से आदमी कम नहीं आते।

और अपने यहाँ बम्बई में आज कम–से–कम इतने वर्षों से कार्य कर रहे हैं तो भी मैं कहती हूँ बहुत लोग आए हैं। नहीं तो मैंने यहाँ तो एक से शुरु किया था। तो उस हिसाब से काफ़ी लोग आए हैं।

पर आपको जान लेना चाहिए कि सहजयोग जैसे मराठी में कहा गया है कि *'येरा गवाळयाचे काम नोहे'* / वीरों का काम है। जिनमें ये वीरश्री हो, वही सहजयोग में आ सकते हैं। नहीं तो आधे लोग आते हैं कि 'माँ, हमारी बीमारी ठीक कर दो', या उसके बाद आते हैं मेरा सर चाटने के लिए। उसके लिए सहजयोग नहीं है। सहजयोग है अपनी आत्मा को पाने के लिए। उसे आप पहले प्राप्त करें, आपकी तन्दरुस्ती भी ठीक हो जाएगी। इतना ही नहीं आपकी तन्दरुस्ती ठीक हो जाएगी, पर आप दूसरों की भी तदरुस्ती ठीक कर सकते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि एक दीप जब जल जाता है तो अनेक दीपों को जला सकता है। इसी प्रकार आप भी अनेकों को जागृत कर सकते हैं।

सहजयोग एक 'जीवन्त' प्रणाली है। यह मरी हुई प्रणाली नहीं जिसके लिए आप अपना मेम्बर–शिप बना लें या पाँच रुपया दे दें।, चार आना, मेम्बर हो जाएँ, ऐसा नहीं है। 'आपको' कुछ होना पड़ता है। आपको बदलना पड़ता है। 'आपमें' कुछ फ़र्क़ आना पड़ता है। और वह आने के बाद आप को स्थायी होना पड़ता है और वृक्ष की तरह खड़ा होना पड़ता है। ऐसे जो लोग होंगे वही सहजयोग के योग्य होते हैं। आजकल बातें तो लोग बहुत करते हैं कि समाज में ये सुधारणा होनी चाहिए और यह अपने देश में होना चाहिए। लेकिन सहज योग में जब आप आएँगे नहीं तब तक आपके देश में न कोई सुधारणा हो सकती है, न आप किसी की मदद कर सकते हैं।

जैसे मैंने आपको समझाया सहजयोग एक प्रेम की शक्ति है, परमात्मा के प्रेम की शक्ति। और 'वह' प्रेम की शक्ति आपके अन्दर बहना शुरु हो जाती है, जो 'सर्वव्यापी' शक्ति है। उस शक्ति को किस तरह से चलाना है, अपने अन्दर स्थायी कैसे करना है, उसका उपयोग कैसे करना है, ये सारी बातें आपको सीख लेनी चाहिए। और इसे सीखने में आपको कोई समय नहीं लगता। अगर आपके अन्दर सद–इच्छा है तो सब चीज़ हो सकती है। अर्थात् आप जानते हैं कि इसके लिए

पैसा–वैसा कुछ नहीं दे सकते। हमारा कोई organisation (संस्था) नहीं है। हमारे यहाँ कोई membership (सदस्यता) नहीं है। कुछ भी नहीं है। यह सबको पाने की चीज़ है। और 'सब' जब पा लें, आप अगर सभी पा लें, तो मेरे ख़्याल से आधे बम्बई का तो उद्धार हो ही गया। आने के बाद सिर्फ़ जमना चाहिए। इसकी बड़ी आवश्यकता है।

बहुत गहन है, और है भी एक लीलामय। बड़ा ही मजेदार है। बहुत ही लीलामय चीज है। अगर आप इसमें आ जाएँ, इतना माधुर्य इसके अन्दर है। कृष्ण ने सारा माधुर्य इसमें भरा हुआ है। और 'सब' तरह की इतनी 'सुन्दर' इसकी रचना है कि उसको जानने पर मनुष्य सोचता है कि "क्या मैं 'इतना' सुन्दर हूँ अन्दर से? क्या मैं 'इतना' विनोदी हूँ? क्या मैं 'इतना' धार्मिक हूँ?" धर्म और विनोद तो हम समझ भी नहीं सकते। लेकिन धर्म जहाँ हमें हँसाये और आनन्द विभोर कर दे, वही धर्म असली है।

परमात्मा आप सबको आत्मसाक्षात्कार दें और सुबुद्धि दें कि इसमें आप जमें और आगे बढ़ें। बहुत–से लोग इसमें बढ़ गये हैं, बम्बई शहर में 'बहुत' लोग हैं। ज़्यादा से ज़्यादा लोग अब हो गये हैं, मेरा कहना है यहाँ सब तो आए नहीं हैं। जो भी हैं आए हुए हैं, लेकिन और इसके अलावा बहुत से लोग हैं जो यह कार्य अनेक केन्द्रों में कर रहे हैं, मुफ्त में कर रहे हैं। आप उनसे मिलिए और अपनी प्रगति करिये।

परमात्मा आप सबको आशीर्वाद दे!

–निर्मला योग
(1983)

".....विशुद्धि चक्र पर श्री कृष्ण ने इसे (विष्णुमाया) स्थापित किया या उन्होंने बहन के इस पावन सम्बन्ध की अभिव्यक्ति की। अपने सामूहिक जीवन में जिन आश्रमों में हम रहते हैं, सहजयोगी के रूप में जहाँ हम घूमते हैं, यदि हमारे अन्दर यह मूल तत्व नहीं होगा तो दुर्व्यवस्था फैली जाएगी, पूर्ण दुर्व्यवस्था। सम्बन्धों की यह पावनता स्थापित किए बिना, कि :- "मेरी पत्नी के अतिरिक्त बाकी सब महिलाएं मेरी बहनें हैं या माताएं" समाज मर्यादित नहीं हो सकता। अमेरिका की समाज प्रणाली का भी यही कारण है कि उनमें सम्बन्धों की पावनता की संवेदना नहीं है।

एक बार यदि किसी को बहन कह दें तो वो बहन है और एक बार यदि किसी को भाई कह दिया तो वो भाई है। ज़रूरी नहीं है कि आप एक ही माँ-बाप की सन्तानें हों-ये ज़रूरी नहीं है-परन्तु समाज की पावनता को बनाए रखना, जहाँ हर मनुष्य शान्ति-पूर्वक रह सके, अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्धान्त (तत्व) है।"

रक्षाबन्धन पूजा
लॉस एंजलिस, यू.एस.ए.
7 अगस्त, 1990